प्रथम अध्याय

1. पंडित नारद का परिचय

1:1 पं ० नारद का काल निर्धारण एवं परिचय

प्रस्तुत अध्याय मे संगीत मकरंद के रचनाकार पंडित नारद (देवर्षि नारद) के काल निर्धारण व परिचय के विषय मे चर्चा की गयी है । विद्वानों के मतों को तथा ग्रंथों को ध्यान मे रखते हुए, शोधछात्रा द्वारा इस विषय पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है। इस शोधकार्य के माध्यम से संगीत मकरंद अर्थात् (संगीत के पुष्प रूपी ज्ञान का पराग) व पंडित नारद (देवर्षि नारद) के काल क्रम को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

जम्बूद्वीप की सांस्कृतिक धरोहर के रूप मे भारत-वर्ष सदियों से विश्व का अध्यात्मिक मार्गदर्शन कर रहा है। पश्चात्य विचारधारा के अंतर्गत अनुसंधान का कार्य व उदय अत्याधिक प्राचीन नही है। भारत-वर्ष मे तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला जैसे महाविश्वविद्यालयों मे अनुसंधान का कार्य करने के लिए अलग से अभ्यास क्रम होता था,परन्तु अनुसंधान भारत के लिए कोई नया विषय नही है। पूर्वकाल मे ऋषि मुनियों द्वारा भी अनुसंधान का कार्य विभिन्न प्रकार किया जाता था। शोधछात्रा को यह गर्व है, कि इस अनुसंधान की पावन भूमि पर अनेक प्रकार के विषयों मे शोध कार्य किये गये है और इन्हीं से प्रेरणा प्राप्त कर शोधछात्रा संगीत मकरंद के रचयिता पंडित नारद (देवर्षि नारद) से जुड़े सभी तथ्यों को प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास कर रही है, जो इस शोध की भूमिका है। पंडित नारद (देवर्षि नारद) व संगीत मकरंद के काल निर्धारण के विषय मे कोई शुद्ध तथा परिष्कृत माहिती उपलब्ध न होने के कारण इस विषय पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है। संगीत मकरंद के रचनाकार पंडित नारद के काल निर्धारण व संगीत मकरंद के विषय मे विभिन्न प्रकार के मत मतांतर है, तथा अध्ययन के पश्चात् यह प्रतीत होता है, कि वैदिक काल से पुराण काल तक भारतीय संस्कृति मे विभिन्न प्रकार से देवर्षि नारद का वर्णन प्राप्त होता है। देवर्षि नारद को गंधर्व भी माना जाता है, जिनके माध्यम से संगीत को पृथ्वी पर लाया गया। देवर्षि नारद का उल्लेख वृतान्तक के रूप मे भी किया जाता है। भारतीय संस्कृति मे देवर्षि नारद के स्मरण के साथ मुनि, ऋषि, गंधर्व, ब्रह्मचारी, भगवान विष्णु भक्त, संत, भविष्यद्दृष्टा, सिद्ध पुरुष आदि के स्वरूप मे किया जाता है। धर्मिक ग्रन्थों की दृष्टी से देवर्षि नारद को ब्रह्मा जी का मानस पुत्र कहा गया है।

पुराणों मे वायु पुराण, विष्णु पुराण, भगवत पुराण आदि मे देवर्षि नारद को मौनेय गंधर्व के रूप् मे स्वीकारा गया है, जो कि नैंसर्गिक शिल्पकार भी थे। देवर्षि नारद को वायु पुराण मे प्रजापति का भी पुत्र कहा गया है।

देवर्षि नारद का वर्णन संगीत वेदों, ग्रन्थों, पुराणों, मे भिन्न-भिन्न रूपों मे मिलता है। अथर्ववेद मे देवर्षि नारद को पौराणिक भविष्य दृष्टा व सिद्धपुरुष कहा गया है। देवर्षि नारद को मैत्रेयी संहिता मे गुरु स्वरूप कहा गया है, तो वही साम-विधान ब्राह्मण मे देवर्षि नारद को ब्रहस्पति के शिष्य और छान्दोयपनिषद मे सनत कुमार के समान माना गया है। "ऐतरेय ब्राह्मण" मे देवर्षि नारद हरिशचन्द्र के यज्ञ पुरोहित के रूप मे दर्शनीय है।[(1)] देवर्षि नारद का स्थान गंधर्व शास्त्रों मे प्रमुख प्रचारक के रूप मे है, तथा बाल्मीकि रामायण मे देवर्षि नारद को गंधर्व कहा गया है।

सभी विषयों मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त होने के बाद भी देवर्षि नारद अपने ज्ञान को शून्य मानते है और विभिन्न स्थानों पर देवर्षि नारद को जिज्ञासू के रूप मे देखा गया है। देवर्षि नारद के विषय मे बहुत मत तथा मतांतर है तथा देवर्षि नारद की चर्चा विभिन्न वेदों, पुराणों, ग्रंथो मे हुयी है। रामायण काल से लेकर महाभारत काल तक देवर्षि नारद की भूमिका संगीतज्ञ के रूप मे हो चुकी थी। देवर्षि नारद को गंधर्व विशेषज्ञ के रूप मे भी जाना गया है, जिसका पूर्ण विवरण बाल्मीकी रामायण, महाभारत, हरिवंश पुराण आदि मे देखने को मिलता है। ऋग्वेद मे भी ऋचाओं के निर्माणकर्ता के रूप मे देवर्षि नारद का वर्णन प्राप्त होता है।

यजुर्वेद तथा अथर्ववेद की संहिताओं मे भी देवर्षि नारद का उल्लेख मिलता है, और वहाँ भी देवर्षि नारद को गन्धर्व विषयक के रूप मे देखा गया है। सामवेद के छन्दोयग्य मे देवर्षि नारद की चर्चा एक जिज्ञासा से पूर्ण जिज्ञासू के रूप मे हुयी है।

महाभारत मे देवर्षि नारद उपदेशक, दिव्य शक्ति सम्पन्न, परामर्शकर्ता, भूत-भविष्य ज्ञाता, नितिज्ञ, युक्तिप्रदाता, मार्गदर्शक, प्रेरणा स्तोत्रदायक, गोपनीय विषय ज्ञाता, दुखः-शोकहर्ता, सूचना प्रसारक, भक्ति प्रचारक, प्रेरक, त्रिलोकगामी, सहायक, कलहप्रिय किन्तु हितकारी, भ्रान्तिहती, संगीत विशारद आदि रूपों मे दर्शनीय है। उपदेशक रूप मे- भगवान श्रीकृष्ण, देवराज इन्द्र ऋषियों, शुक्रदेव मुनि, ऋषि देवमत, राजाओं को, दुर्योधन को धृतराष्ट्र, भक्त, पुण्डरिक आदि के उपदेशक रूप मे देवर्षि नारद दर्शनीय है । लिंग पुराण की एक कथा के अनुसार राजा अम्बरीष ने मार्कण्डेय मुनि से प्रश्न करते हुए कहा है, कि देवर्षि नारद को गन्धर्व क्यों कहा गया ? इस प्रश्न के उत्तर मे मार्कण्डेय मुनि जी कहते है, कि देवर्षि नारद भगवान विष्णु और माँ लक्ष्मी के समक्ष अपना गान आरम्भ करते है। उस समय भगवान विष्णु द्वारा नारद का गायन स्थगित करवा कर तुम्बरू ऋषि का गान आरम्भ करवाया इस समय ऋषि तुम्बरू का मधुर गायन सुनकर देवर्षि नारद अभिप्रेरित हुए ऋषि तुम्बरू जैसी गान विधा प्राप्त करने के लिए सहस्त्र वर्षो तक गान तपस्या मे लीन

---

(1) ऐतरेय ब्राह्मण/काण्ड-7/अध्याय 3/पृष्ठ-1

हो गए। कई वर्षों की तपस्या से प्रसन्न होकर एक आकाशवाणी हुयी कि हे! शार्दुल जिस फल प्राप्ती हेतु इतना घोर तप किया है, उसका फल मानसोतर पर्वत पर उलूक गान बन्धू से प्राप्त होगा।

किमर्थं मुनिशार्दुल तपस्तपसि दुश्च्म।

उलूक पश्व गत्वा त्वं यदि गाने रता मति।

मानसोत्ताशैले तु गानबन्धुरिति स्मृतः॥[(1)]

इन उलूक बन्धु से गायन विधा ग्रहण करने के पश्चात् देवर्षि नारद विपंच्ची आदि वाद्यों, गीत प्रस्तार मे निपूर्ण, सभी स्वरों अंगों तथा भेंदों मे परिपक्व ज्ञाता गन्धर्व कहे गए है।

ततः समस्तसम्पन्नों गीतप्रस्तारकादिषु।

विचञ्च्यादिषु सम्पन्न्: सर्वंस्वरविभागवित्॥

अयुतानि च षट्त्रिंशत् सहस्राणि शतानि च॥

स्वराणां भेदयोगेन ज्ञातवान्मुनिसत्तमः॥[(2)]

छन्दोंग्योपनिषद के सप्तम अध्याय मे देवर्षि नारद का वर्णन सर्वविद्या शास्त्र मे पूर्ण होने की पुष्टि प्रदान करता है। देवर्षि नारद सर्वज्ञानी दर्शनीय है, जिसमे देवर्षि नारद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। पंचमवेद प्रत्येक विद्या तथा देवजन को प्रसन्न करने वाला नृत्य संगीत गान विद्या के ज्ञाता के रूप मे दर्शनीय है।[(3)] कुछ साक्ष्यों व तथ्यो के अनुसार यह भी माना जा सकता है की संगीत मकरंद के द्वितीय अध्याय नृत्याध्याय के प्रथम पाद के पृष्ठ 33 मे उल्लेखित श्लोक का वर्णन **पद्म पुराण, शिव पुराण, नारद पुराण, स्कन्द पुराण, गरुण पुराण** मे भी क्रमशः मे प्राप्त होता है ।

ब्रह्महा च सुरापानी स्वर्णस्तेयी च तल्पगः।

तत्संयोगी पञ्चमश्च येऽतिपातकिनः स्मृताः॥[(4)]

अर्थात्- ब्रह्महत्या (ब्रह्म हत्या का तात्पर्य है कि सामाजिक, आर्थिक, मानसिक व शारीरिक रूप से पहुचाया हुआ आघात ब्रह्म हत्या के समान ही कहलाया जाएगा), सूरा (मदिरा) पान करने वाला, चोरी करने वाला, गुरूपत्नी का गमन करने वाला तथा इन सभी चार महा पापों मे संसर्ग या पापों मे साथ देने वाला व्यक्ति पंचवा महापापी कलाएगा जो कि अक्षयम है।

---

(1) लिंग पुराण/उत्तर भाग/द्वितीय अध्याय/श्लोक 6-7
(2) लिंग पुराण/उत्तर भाग/द्वितीय अध्याय/श्लोक 68-69
(3) छन्दोंग्योपनिषद/ पहला खण्ड/सातवाँ अध्याय/श्लोक-2/पृष्ठ-244
(4) नारद विरचित:/संगीत मकरंद/नृत्याध्याय/प्रथम पाद/पृष्ठ-33

पद्म पुराण के अनुसार-

ब्रह्महा स्वर्णस्तेयी च सुरापी गुरुतल्पगः ।
महापातकिनश्चैते तत्संयोगी च पंचमः ॥[1]

शिव पुराण के अनुसार-

ब्रह्मघ्नश्च सुरापश्च स्तेयी च गुरुतल्पगः।

महापातकिनस्त्वेते तत्संयोगी च पंचमः॥[2]

नारदमहा पुराण के अनुसार-

ब्रह्महा च सुरापी च स्तेयी च गुरुतल्पगः।

महापातकिनस्त्वेते तत्संसर्गी च पंचमः॥[3]

स्कन्द पुराण के अनुसार-

"ब्रह्मघ्नो मद्यपः स्वर्णस्तेयी च गुरुतल्पगः।

तत्संयोगी भ्रूणहंता मातृहा पितृहा मुने ॥[4]

गरुण पुराण के अनुसार-

अतः परं प्रवक्ष्यामि प्रायश्चित्तविधिं द्विजाः।

ब्रह्महा च सुरापश्च स्तेयी च गुरुतल्पगः ॥

पञ्च पातकिनस्त्वेते तत्संयोगी च पञ्चमः।

उपपापानि गोहत्याप्रभृतीनि सुरा जगुः॥[5]

देवर्षि नारद के विषय मे पूर्ण चर्चा करने से पहले उनके परम भक्त होने व उनकेआदर्श चरित्र का स्वरूप स्वयं प्रस्तुत होता है ।

अहो देवर्षिधन्योऽयं यत्कीर्तिं शारंगधन्वनः ।

गायन्मद्यन्निदं तन्त्रया रमन्यन्त्यातुरं जगत् ॥[6]

---

(1) पद्म पुराण/भूमिखण्ड/अध्याय 67/श्लोक-50
(2) शिव पुराण/नौवां खंड/अध्याय पाँच/श्लोक-23
(3) नारदमहा पुराण/अध्याय 30/श्लोक-5/पृष्ठ 48
(4) स्कन्द पुराण/काशी खंड/श्लोक-81
(5) गरुण पुराण/आचारकाण्ड/अध्याय 52/श्लोक 1-2
(6) भागवत पुराण/प्रथम स्कन्द/षष्ठम अध्याय/श्लोक-39

अर्थात् भगवान वासुदेव के परम भक्त महर्षि नारद का उच्च कोटी भक्तों मे आर्दश चरित्र वसुधा के प्रत्येक भक्त के लिए आद्या प्रतिमान है। इस निरन्तर चलायमान सृष्टि के हर एक कण मे भगवान श्री वासुदेव का अंश विद्यमान है। तथा वदों, पुराण, उपनिषदों एतिहासिक ग्रन्थों, धार्मिक ग्रन्थों मे महर्षि नारद के सत्याचरण, धर्मोउपदेशक तथा चरित्रांकन से अन्तर व्याप्त है। मानव संस्कृति से जुड़े प्रत्येक धार्मिक ग्रन्थ ऋगवेद, यर्जुवेद, सामवेद तथा अथर्वेदादि, संहिताएं, उपनिषद, आर्ष ग्रन्थों जैसे रामायण, महाभारत आदि महर्षि नारद की महिमा से अछूता नही रहे है। इसके अतिरिक्त सभी आर्दश ग्रन्थ नारद भक्तिसूत्र, नारद गीता अथवा नारद संहिता आदि मे महातेजस्वी नारद का ज्ञानोपदेश विद्यमान है। जगत कल्याणकारी महर्षि नारद धार्मिक सहिताओं, प्राचीन ज्योतिषशास्त्र, संगीतशास्त्र, वेद, पुराण आदि से अगर देवर्षि नारद के दिए गए ज्ञान के उपदेश, उनकी कथाओं तथा उनके नियमों से वंचित कर दिए जाए तो समस्त शास्त्र सार हीन हो जाएगें। इसमे कोई अतिश्योक्ति नही है, कि महर्षि नारद संस्कृत के साहित्यों व ग्रन्थों के आधार स्तम्भ है। दिव्यदर्शी नारद ज्ञान के भण्डार, भक्ति के आदर्श, अत्यन्त पवित्र स्नेह के कोष, दया व विद्या के निधान, सत्याचरण की नींव, सभी तत्वों मे विदित जगत कल्याणकारी सम्पूर्ण गुणों से निपूर्ण भण्डार है।

महान परमज्ञानी पुरूष लोक कल्याण के लिए सृष्टि पर अवतरित होते है, जिस प्रकार भगवान स्वयं अनुदित होते है, ऐसे महातपस्वी तपोधन मुक्त होकर भी सृष्टि के प्रत्येक कण व जीवों के कल्याण हेतु विराजमान रहते है तथा ऐसे महापुरूष जगत के मंगल कार्य के लिए ही सृष्टि पर अवतरित होते है। इनका प्रत्येक कार्य परमात्मा या ईश्वर का कार्य होता है, तथा यह अहंकार, ईष्या, अविद्या, असक्ति इत्यादि से दूर रहते है। समस्त गुणों से परिपूर्ण महायोगी नारद है। महर्षि नारद प्रत्येक लोक जैसे-गोलोक, ब्रह्मलोक, वैकुण्ठलोक, भूलोक, पाताल आदि मे विचरण के लिए गतिमान है, तथा महातपस्वी नारद अपने तप, योग व मानसिक इच्छा से किसी भी लोक मे पहुँच सकते है। महर्षि नारद को देवता से असुरों तक सम्मान व आदर प्राप्त है। महाज्ञानी नारद का प्रत्येक कार्य जगत के कल्याण के लिए ही है। महर्षि नारद के नाम व नारद शब्द की उत्पत्ति के बारे मे मुनि सौति शौनिक ऋषि से कहते है।

अनावृष्ट्यवशेषे च कालो बालो बभूव ह ।
नार ददौ जन्मकाले तेनाय नारदाभिधः॥[(1)]

अर्थात् अवर्षण (सुखा बढ़ना या वर्षा का अभाव होना) का अंत करने के लिए उस बालक का जन्म होगा, जो संपूर्ण जगत को जल (नार) देकर सब को तृप्त करेगा । उस बालक का नाम नारद नाम से जाना जाएगा

(1) ब्रह्मवैवर्त पुराण/ब्रह्मखण्ड/अध्याय-21/पृष्ठ-32

नार+द =जल प्रदान करने वाला या संपूर्ण जगत का अज्ञान नाश समाप्त करने वाला ''नांर ददाति'' जो पितरों का जल द्वारा तर्पण करता है, वह नारद नाम से विख्यात है। नारद को मुनियों मे सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, तथा मुनि शब्द का अर्थ महाभारत मे स्पष्ट किया गया है ।

मौनान्न स मुनिर्भवति नारण्यवासनान्मुनिः।

स्वलक्षणं तु यो वेद स मुनिः श्रेष्ठमुच्यतेः॥[1]

अर्थात् मौन धारण से कोई मुनि नही कहलाता वनवास करके कोई मुनि नही कहलाता । मुनि वह कहलाता है, जो अपनी अंतरात्मा मे परमात्मा का वास करता है, और जो जगत के कल्याण कार्य मे तत्पर रहता है, वह मुनि कहलाता है। महर्षि नारद के पुनर्जन्म का वृतांत स्मृतियों, पुराणों इत्यादि मे विस्तृत रूप से प्राप्त होता है। शिव पुराण [2] मे प्रथम जन्म मे नारद भगवान ब्रह्मा के मानस पुत्र के रूप मे तथा ब्रह्मा द्वारा कहे जाने पर भी गृहस्थ धर्म स्वीकार न करने पर पिता द्वारा गंधर्व रूप मे जन्म की कथा द्वितीय जन्म मे चित्ररथ की 50 पुत्रियों के प्रीति होने का शाप देते है,भागवत पुराण तथा ब्रह्मवैवर्त पुराण मे नारद के गंधर्व रूप उपबहर्रण के जन्म का वृतांत प्राप्त होता है। तृतीय जन्म मे महर्षि नारद कलावती और कश्यप के पुत्र के रूप मे जन्म लेते है, जिसकी कथा का व्रतांत प्राप्त होता है, तथा इसका वर्णन भागवत पुराणमे प्राप्त होता है।[3]

जिसमे पाँच वर्ष की आयु वाले बालक नारद संतों के साथ जप तप मे लीन हो गए जिससे प्रसन्न होकर परमपिता ब्रह्मा जी आकाशवाणी द्वारा नारद को पुनः अपने पुत्र होने व पार्षदत्व प्राप्त होने का आशीर्वाद देते है। और नारद को देवर्षि की उपाधि प्रदान करते है। महर्षि नारद की शिक्षा का वृतांत भागवत पुराण छंदोग्योपनिषद 7वैंअध्याय मे सनकादि ऋषियों द्वारा तत्वज्ञान की शिक्षा देते हुए गुरु रूप मे दर्शनीय है।[4] महर्षि नारद की गान विद्या लिंग पुराण के अनुसार मनसोत्तर शैल पर मुनि शार्दूल द्वारा बताए गए गानबंधु द्वारा पूर्ण होती है।[5] लिंग पुराण मे नारद के गंधर्व पद की कथा तथा भगवान श्री कृष्ण द्वारा संगीत शिक्षा की प्राप्ति कर पूर्ण होने की कथा का वृतांत प्राप्त होता है।[6] नारद के विवाह का वृतांत ब्रह्मवैवर्त पुराण मे प्राप्त होता है, जिसमे पर्वत मुनि के शाप के कारण शिबिराज की पुत्री से विवाह की कथा का वर्णन मिलता

---

(1) महाभारत/पंचम खण्ड/उद्योग पर्व/अध्याय-43/श्लोक-60
(2) शिवपुराण/भूमि खण्ड/दूसरा अध्याय/श्लोक-27
(3) भागवत पुराण/प्रथम खण्ड/अध्याय-6/श्लोक-30
(4) ब्रह्मवैवर्त पुराण/अध्याय-20/ श्लोक--62-63
(5) लिंग पुराण/ पृष्ठ-74/श्लोक-68-69
(6) लिंग पुराण/श्लोक-77-79/ पृष्ठ-74

है।[1] नारद द्वारा रचित ग्रंथ जो संगीतशास्त्र, धर्मशास्त्र, भक्ति, ज्योतिष आदि से संबन्धित है वो इस प्रकार से है –

संगीत ग्रंथ-नारदीय शिक्षा, संगीत मकरंद, पंचमसार संहिता, चित्वश्शिंत् इत्यादि

धर्म शास्त्रीय ग्रंथ- बृहत्रारदी, लघु नारदी, नारद स्मृति, नारद गीता इत्यादि

भक्ति ग्रंथ- नारद भक्तिसूत्र, नारद पंचरत्न, नारद संहिता, नारदीय जातक, नारदीय ज्योतिष

पौराणिक ग्रंथ-नारद पुराण व आदि ग्रंथों को महर्षि नारद द्वारा रचित माना जाता है।

महाभारत महाकाव्य मे महर्षि नारद की विभिन्न उपाधियाँ प्राप्त होती है - मुनियों मे श्रेष्ठ महर्षि नारद, देवर्षि नारद, ब्रह्मपुत्र नारद, तपस्वी व महातेज से पूर्ण नारद, परमज्ञानी नारद, तपोधन नारद, पुरुषों मे श्रेष्ठ नारद जगत का कल्याण करने वाले नारद आदि का वर्णन प्राप्त होता है।[2]

स्कन्ध पुराण मे श्रीकृष्ण उग्रसेन को नारद का चरित्र स्तुति रूप बताते हुए कहते है कि- महर्षि नारद परम पिता ब्रह्मा की गोद (अंक) से उत्पन्न हुए है। उनका ह्रदय अलंकार से ओतप्रोत है, जिनका जीवन मानव कल्याण के लिए है। उन देवों मे श्रेष्ठ ऋषि को मैं प्रणाम करता हूं उनमे स्वार्थ चपलता क्रोध का अंश भी नही है तथा किसी भी कार्य मे विलंब ना करते हुए प्रत्येक कार्य को पूर्ण करने वाले है, सभी प्राणी उनकी उपासना करते है। सरलता से भरपूर यथार्थ से दूर रहने वाले स्वभाव से सुख देने वाले, सुंदर वचन व वाणी वाले, सबका हित करने वाले, वेदों पुराणों मे बताएं ज्ञान को बांटने वाले, उत्तम वक्ता, दोष रहित तपस्या से पूर्ण जीवन मुनियों मे श्रेष्ठ नारद स्थिरता से पूर्ण सर्वगुण संपन्न महाज्ञानी कला संगीतशास्त्र ज्ञान के जानकार विशारद ऐसे महातपस्वी महातेजस्वी महर्षि नारद को मैं श्री कृष्ण प्रणाम करता हूं।[3]

नाट्यशास्त्र के अनुसार-

नारदाद्यास्तु गन्धर्वा: गानयोगे नियोजिता:।[4]

अर्थात्-ब्रह्मा द्वारा नारद आदि गंधर्व गान मे नियुक्त किये गये है। इस श्लोक के अध्ययन द्वारा शोधार्थी को ऐसा प्रतीत होता है, कि नारद को संगीत सम्बन्धित कार्यो के लिए नियुक्त किया जाता था, क्योंकि नारद ही संगीत को पृथ्वी पर लाए और नारद ने तीनों लोकों का भ्रमण कर संगीत के संवाद वाहक की भूमिका

---

(1) ब्रह्मवैवर्त पुराण/श्री कृष्ण जन्म खण्ड/पृष्ठ-130 ,1160/श्लोक 86
(2) महाभारत/शांति पर्व/अध्याय-275/श्लोक-9
(3) स्कन्द पुराण/महेश्वर खण्ड /पृष्ठ-52/श्लोक-32
(4) शास्त्री,बाबूलाल शुक्ल/नाट्यशास्त्र/पृष्ठ-73

निभायी। नारद का व्यक्तित्व भारतीय संस्कृति व धार्मिक ग्रंथो के इतिहास की एक पहेली के रूप मे नजर आता है, क्योंकि नारद के नाम से बहुत से संगीत ग्रंथो की रचना हुयी है।"नाट्यशास्त्र के रचयिता भरत ने नारद के प्रति इस प्रकार कृतज्ञता ज्ञापित की है-

गन्धर्वम् एते्त कथित मया हि यत् पूर्वम् उक्तं तु हि नारदेन (1)

अर्थात् (भरत) मेरे द्वारा गंधर्व (देवताओं) को यह कहा गया है, जो पहले नारद ने मुझसे कहा था इस श्लोक के माध्यम से शोधार्थी को यह ज्ञात होता है कि गंधर्व नारद भरत से पूर्व है। इस प्रकार दतिल्ल, मतंग आदि के द्वारा भी नारद का विवरण व उल्लेख प्राप्त होता है। नारद के विषय मे विचार-विमर्श व चर्चा से यह ज्ञात होता है, कि नारद देव गंधर्व तो थे ही साथ ही नारद भू-गंधर्व भी थे जिनकी विशिष्टता है और इनके मतों का समय-समय पर प्रतिपादन होता रहा है। महर्षि नारद संगीत शिक्षा गायन वादन मे पूर्ण पारंगत थे। धार्मिक दृष्टि से नारद ब्रह्मा जी द्वारा संगीत गान के लिए पृथ्वी पर नियुक्त थे।

History of classical Sanskrit literature के लेखक कृष्णामचारी द्वारा नारद को वीणा के साथ हिन्दू सिद्ध पुरुष के रूप मे चित्रित किया है, सर्वप्रथम नारद को ही संगीत कला मे दीक्षित एवं पहल करने वाला बताया है।(2) नारद की वीणा का नाम महति वीणा था, जिसमे 21 तार थे। वीणा के नाम से स्पष्ट होता है, कि यह वीणा आकार मे बड़ी व अधिक तंत्रियों वाली थी, जिसमे लगभग 1000 तंत्रिया थी। नारद को गंधार ग्राम का प्रणेता माना गया है। नारद के द्वारा संगीत शास्त्र ग्रंथो की रचना की गई है, जिनमे से नारदीशिक्षा, संगीत मकरंद, पंचमसार संहिता आदि ग्रंथ है। नाट्यशास्त्र मे प्रस्तुत श्लोक के अनुसार -

नारादस्तुम्बुरुश्रैव विश्वावसुपरोममा:
प्रति गृहन्त मे सर्वे गन्धर्वा बलिमुद्यतम् ॥(3)

अर्थात् नारद, तुम्बुरु तथा विश्वावसु जिसमे प्रमुख है ऐसे सभी गंधर्वगण आप मेरे द्वारा प्रस्तुत बलि को ग्रहण करे। इस श्लोक से शोधार्थी को यह अनुभूति होती है कि नारद व उनके समकालीन आचार्यो की चर्चा विभिन्न प्राचीन ग्रंथो मे प्राप्त होती है। भारतीय संगीत मे इतिहास के मध्य युग मे कुछ ग्रंथों की रचना नारद के द्वारा मानी जाती है। नारद का नाम पुराण काल से सर्वविख्यात है। संगीत के प्रचारक व महति वीणा के आविष्कारक के रूप मे जाना जाता है। नारद की चर्चा व समरण करने मे प्रकालपित होता है, कि स्कंध पर वीणा लटकी हुई है, और नारद निरंतर नारायण का जाप करते हुए तीन लोकों का भ्रमण कर रहे हो। यह

---

(1) काव्या,डॉ० लावण्य कीर्ति सिंह/भारतीय संगीत ग्रंथ/पृष्ठ-31
(2) काव्या,डॉ० लावण्य कीर्ति सिंह/भारतीय संगीत ग्रंथ/पृष्ठ-30
(3) शास्त्री, बाबूलाल शुक्ल/नाट्यशास्त्र/श्लोक-62/पृष्ठ-73

कल्पना संगीतज्ञ नारद की है, जिनके द्वारा संगीत को पृथ्वी पर लाया गया तथा संगीत के ग्रंथो की रचना की गई। रामायण काल से महाभारत काल तक नारद की भूमिका संगीतज्ञ, उपदेशक, मार्गदर्शक, प्रवक्ता, जिज्ञासु, कौतुकप्रिय तथा सर्वगुण सम्पन्न इत्यादि रूप मे होती है। नारद को गंधर्व विशेषज्ञ के रूप मे भी जाना गया है, जिसका पूर्ण विवरण रामायण, महाभारत, हरिवंशपुराण आदि वेदांगो पुराणों मे देखने को मिलता है। ऋग्वेद मे भी ऋचाओं के निर्माणकर्ता के रूप मे नारद का वर्णन प्राप्त होता है। यजुर्वेद तथा अथर्ववेद की संहिताओं मे नारद का उल्लेख मिलता है। वहा भी नारद गन्धर्व विषयक के रूप मे दर्शनीय है। सामवेद के छन्दोयग्य मे नारद की चर्चा एक जिज्ञासा से पूर्ण व्यक्ति के रूप मे है। संगीत मकरंद व महर्षि नारद के विषय मे विद्वानों के मतभेदो को शोधार्थी द्वारा एकत्रित करके विद्वानों के विचारो को यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

दत्तिल के अनुसार - गन्धर्व विद्या का प्रचार भूमंडल पर करने का श्रेय नारद को है।[(1)]

पंडित ओमकार नाथ ठाकुर के अनुसार- संगीत मकरंद का काल निश्चित रूप से संगीत रत्नाकर के पूर्व होना चाहिए[(2)] क्योंकि संगीत मकरंद मे रुद्रट, उद्भट, लोल्लट, अभिनवगुप्त, नान्यदेव आदि के नाम नही मिलते, जो की संगीत रत्नाकर मे मिलते है, क्योंकि 7वीं शताब्दी मे मातृगुप्त का काल था और 8 वीं शताब्दी मे रुद्रट, उद्भटादि का काल था ।

लक्ष्मी नारायण गर्ग के अनुसार-संगीत मकरंद का काल 8वीं से 9वीं शताब्दी के मध्य मे है, जो की ग्रन्थ के अंत मे निर्दिष्ट है।[(3)]

1:1:1 वैदिक साहित्य से वेदांगों मे नारद- भारतीय सभ्यताओं का विश्व मे एक अनूठा व मौलिक स्थान है। वैदिक साहित्यों द्वारा ही मानव अपनी संस्कृति व मान्यताओं को पहचान सकता है। तथा वैदिक साहित्य के ज्ञान के बिना मानव का ज्ञान अधूरा प्रतीत होता है। इस ज्ञान के प्रति मौलिकता बनाये रखने के लिये साहित्यों व वेदांगों का आश्रय लेना आवश्यक है। समाज के प्रत्येक कार्य का आधार शास्त्र व साहित्य है, जो कि मानव समाज का आएना है। संस्कृति के प्रचार व प्रसार का आधार शास्त्र ही है, तथा समाज का स्वरूप पहचानने के लिये तत्कालिक शास्त्र को समझना अति आवश्यक है। भारतीय सभ्यता व संस्कृति मे प्रत्येक व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक जुड़ें सभी सोलह संस्कारों का वर्णन शास्त्रों मे ही प्राप्त होता है। जो कि शास्त्रों व साहित्यों मे भी वर्णित वेद-मन्त्रों के बिना सम्भव ही नही है। मानव जीवन की प्रत्येक मान्यतायें परम्परायें,

---

(1) संगीत मैगज़ीन/1970 फरवरी/पृष्ठ-3
(2) पाण्डेय, डॉ० सुधांशु/ताल रत्नाकर/ पृष्ठ-63
(3) पाण्डेय, डॉ० सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-63

प्रार्थना, अर्चना, यज्ञ, पूजन संस्कार, शास्त्रविधि, त्योहार, संकल्प इत्यादि वेद व पुराणों पर आधारित है। वैदिक साहित्य अतीत व वर्तमान का आधार स्तम्भ है। जिसके प्रकाश द्वारा मावन संस्कृति को देखा व समझा जा सकता है।

"वेदाऽखिलो धर्ममूलम्"[1]

अर्थात्-स्मृतिकार मानव धर्मशास्त्र द्वारा वेदों को धर्म का मूल आधार माना गया है। जो कि भारतीय सभ्यता व संस्कृति का अभिन्न अंग है। वैदिक साहित्य का स्वभाव व विशेषता संस्कृत भाषा के **'विद्'** धातु से उत्पन्न वेद शब्द का शाब्दिक अर्थ ज्ञान व जानना है।

''वेदप्रणहितों धर्मो ह्मधर्मस्तद्विपर्ययः।

वेद नारायणः साक्षात् स्वयम्मूरिति शूश्रुम ॥[2]

अर्थात्- वेदो मे वर्णित कर्मो के नियम को धर्म कहा गया है ,तथा जिन कर्मों को वर्जित किया गया है, वो अर्धम है वेदो को भगवान का स्थान प्राप्त है, तथा यह भगवान के ज्ञान का प्रकाश है।

संहिताओं के अनुसार चार वेद है ।

- ऋग्वेद अर्थात् वेदों द्वारा ऋचाओं का ज्ञान
- यजुर्वेद अर्थात् वेदों द्वारा मंत्रों या यजुषो का ज्ञान
- सामवेद अर्थात् वेदों द्वारा सामों का ज्ञान
- अथर्ववेद अर्थात् वेदों द्वारा अथर्वो का ज्ञान

1:1:1:1 ऋग्वेद- ऋग्वेद को दशतयी कहा जाता है, क्योकि ऋग्वेद मे ऋचाऐं दस मण्डलों मे विभाजित है। ऋग्वेद मे विभिन्न देवी-देवताओं के धार्मिककृत, अनुष्ठाान के विधान का एक स्वर से एकत्रित होना मिलता है। जो कि मानव के जीवन ज्ञापन के लिए परत उपयोगी सिद्ध होता है। इस तरह से ऋग्वेद मे तैंतीस देवी-देवताओं के गुणों की प्रशंसा का कथन मिलता है। इनमे सर्वश्रेष्ठ स्थान इन्द्रदेव व अग्निदेव को प्राप्त है, तथा कई स्थानों पर पर्वत, सूर्य, नदी, उषा, मारूत, वरूण आदि देवताओं का बहुत ही मन को मोहने वाले चित्रो का वर्णन मिलता है। ऋग्वेद के 20 सूक्तों को संवाद सूक्त कहा जाता है, तथा ऋग्वेद के सभी सूक्तों को 10 वर्णो मे बांटा गया है। जो क्रमशः इस प्रकार है- 1.देवता सूक्त 2.ध्रुवपद 3.कथा 4.संवाद 5.दान स्तुती 6.तत्व

---

(1) मनु स्मृति/द्वितीयअध्याय/श्लोक-6/पृष्ठ-24
(2) भागवत पुराण/षष्ठम स्कन्द/प्रथम अध्याय/श्लोक-40

ज्ञान 7.संस्कार 8.मांत्रिक 9.लौकिक 10.आप्रीसूक्त। ऋग्वेद मे महर्षि नारद का वर्णन अष्टम मण्डल के तेरहवें सूक्त के तेरहवें अनुवाक मे वेद मंत्रों के अर्थ को जानने वाले के रूप मे उल्लेखित है ।

1.1.1.2. यर्जुवेद- ऋग्वेद के पश्चात यर्जुवेद की रचना का वर्णन मिलता है। यर्जुवेद अर्थात् यजुषों का संकल्न यजुष का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है जिसके अक्षरों की संख्या का निर्धारण न किया जा सके। अर्थात् जिन मन्त्रों का गान न किया जा सके तथा जो छन्द रहित हो उसे यजुष कहते है। जैसे मानव की बोली छंद रहित है। छंद राहित होने के कारण 'यजुष' यह वेद यर्जुवेद कहा गया है। यर्जुवेद की छः शाखाएं है- जिसमे शुक्ल यर्जुवेद मे 1.वाजसनेयी संहिता 'माध्यन्दिन' 2.काण्व संहिता, कृष्णयर्जुवेद मे- 1.कंठ संहिता 2. कपिण्ठल संहिता 3. मैत्रायणी संहिता 4. तैत्तरीय संहिता यर्जुवेद संहिता के अध्ययन के बिना किसी भी ब्राह्मण ग्रन्थ से सम्बन्धित धार्मिक कार्य से जुड़ी विधि को समझा पाना मुश्किल होगा।

1:1:1:3 अथर्ववेद- अथर्ववेद का अर्थ है, 'अभिचार'तंत्र मे प्रयोग होने वाले मंत्रों से जुडा ज्ञान का वर्णन यज्ञ धार्मिक कार्य पूजन विधि का विवरण कम होने के कारण अर्थववेद को तीनों वेदों की अपेक्षा कम महत्व दिया जाता है। ऋषि पतंज्जली के अनुसार अर्थववेद की नौ शाखाएं है- पिप्लाद, मोद, स्तोद, शैनकीय, जाजल, जाजद, ब्रह्मदेव, देवदर्श चरणवैद्य।

आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार-अर्थववेद मे 20 काण्ड 34 प्रकरण 111 अनुवाक, 739 सूक्त, तथा 5849 मन्त्र है।

तं वृक्षा सेधन्ति छायां नो मोपगा इति ।

यो ब्राह्मणस्य सद्धनर्माभ नारद मन्यते ॥[(1)]

अर्थात्- अर्थववेद मे महर्षि नारद को इच्छा से भरपूर्ण जिज्ञासू ज्ञानरूपी सर्वज्ञानी उपदेशक के रूप मे वर्णन मिलता है। तथा अंगरिका ऋषि द्वारा महर्षि नारद द्वारा दिऐ गये कुछ मंत्रों मे नारद को दिये उपदेशों का भी वर्णन मिलता है। अर्थववेद के पंचम काण्ड के 19वें सूक्त मे ईश्वर को न मानने वाले व्यक्तियों की चर्चा की गई है, जिससे ब्राह्मण पीडाग्रस्त होता है, और यहां ब्राह्मण को मिलने वाले दुखः पीडा व दुखः देने वाले बुरे कर्मों की चर्चा की गई है, और ऐसा कहा गया है, कि ब्राह्मण को कष्ट देने वाले व्यक्ति को प्रकृति अपनाने से मना कर देती है। अथर्ववेद के द्वादश काण्ड के चतुर्थ सूक्त मे नारद को ऋषि अंगरिका द्वारा दिए वाचन मे वशाधेनु (वन्धया गाय) को ब्राह्मण को दान देने की चर्चा की गई है। अर्थववेद मे नारद का वर्णन उपदेशक के रूप मे प्राप्त होता है।

---

(1) अर्थवेद/पंचम काण्ड/सूक्त-19/श्लोक-9

1:1:1:4 सामवेद सामवेद का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। व चारों वेदों से ज्यादा प्रभावशाली माना जाता है। गीता मे श्री कृष्ण द्वारा सामवेद को सभी वेदों मे श्रेष्ठ माना है। साम का अर्थ है जिस गान के द्वारा देव प्रसन्न होते है। साअ+म के मिश्रण से बना है। ऋग्वेद की ऋचाओं और स्वरों के मिश्रण को साम कहा जाता है। सामवेद के स्वर पाठ से ही भारतीय संगीतशास्त्र की उत्पत्ति हुयी है।

ऋषि पतंज्जली के अनुसार-सामवेद की 1000 शाखाऐ है। तथा वर्तमान मे तीन शाखाऐं प्रकाश मे है जो की 1.कौथुमीय 2.राणायनीय 3.जैमिनीय। सामवेद के दो खण्ड है। पूर्वाथिक, उत्तरार्चिक तथा सामवेद मे 1875 मन्त्रों का वर्णन है, तथा महर्षि नारद सामवेद के आचार्य के रूप मे भी दर्शनीय है। महर्षि नारद के विषय मे चर्चा करते हुए यह कहा जा सकता है, कि नारद भिन्न-भिन्न स्थानों पर अलग-अलग रूप मे दर्शनीय है। ऐतरेय ब्राह्मण मे महर्षि नारद को मार्गदर्शक तथा गुरू रूप मे देखा जा सकता है। जिसमे महर्षि नारद राजा हरिश्चन्द्र को उपदेश देते हुए तथा उनके दुखों के निवारण हेतु ज्ञान देने वाले गुरू है, और राजा के पुरोहित रूप मे दार्शनिक है।

1:1:1:5 छन्दोंग्योपनिषद् मे नारद-

"ऋग्वेदं भगवोऽध्यमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणंचतुर्थमितिहासपुराणं पञ्च्वमं वेदनां वेदं पित्र्यं राशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्यां सर्प देवजनविद्या मेतद्भगवोऽध्यमि"॥[1]

अर्थात्- महर्षि नारद को छन्दोंग्योपनिषद् के सप्तम अध्याय मे विद्या व ज्ञान मे निपुण माना गया है। महाज्ञानी महर्षि नारद चारों वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, पुराण, पंचमवेद, व्याकरण, श्राद्धकल्प, गणित, निधिशास्त्र, तर्कशास्त्र, नीतिज्ञान, देवविद्द्या, ब्रह्मविद्या, भुतविद्या, क्षत्रविद्या, नक्षत्रविद्या, सर्पविद्या देवजनविद्या, संगीतशास्त्र आदि सभी मे निपूर्ण और ज्ञाता है । सभी विषयों मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त होने के बाद भी नारद अपने ज्ञान को शून्य मानते है और विभिन्न स्थानों पर नारद को जिज्ञासू के रूप मे देखा गया है। छंदोंपनिषद मे सप्तम अध्याय मे महर्षि नारद को सनतकुमार के शिष्य के रूप मे ज्ञान के प्रति जिज्ञासी पुरूष के रूप मे देखा गया है । नारदीय शिक्षा मे नारद को देव गन्धर्व व भू-गन्धर्व के रूप मे देखा जाता है । नारदीय शिक्षा मे महर्षि नारद सामवेद के ज्ञाता तथा नारद द्वारा संगीत शास्त्र को नारदीय शिक्षा एक बहुमूल्य भेंट है । इस ग्रन्थ मे नारद गन्धार ग्राम के उपदेशक है । वीणा वादन कर श्री हरि का भजन करने वाले नारद दैवीय रूप मे जाने जाते है तथा नारद द्वारा नारदीय शिक्षा मे संगीत के आरम्भ विषय के बारे मे बताया गया है ।

(1) छन्दोंग्योपनिषद्/सप्तम अध्याय/प्रथम खण्ड/श्लोक-2

1:1:1:6 नारदीय शिक्षा -नारदीय शिक्षा मे नारद की वीणा महती के विषय मे बताया गया है। महती वीणा मे 21 तार होते थे मन्दर मध्य और तार तीन सप्तक होते थे 21 मूर्छनाऐं और तीन ग्राम का स्वरूप स्पष्ट था। नारद की महती वीण मत्कोकिला नाम से जानी जाती है। महर्षि नारद द्वारा संगीतशास्त्र के बहुमूल्य ग्रन्थों मे- नारदीय शिक्षा, संगीत मकरन्द तथा पंचम्सार संहिता है। धर्म सूत्रों मे नारद भक्ति सूत्र नारद स्मृति का वर्णन मिलता है।

1:1:1:7 नारद भक्तिसूत्र-नारद भक्तिसूत्र को 84 सूत्रों मे भक्ति से मानव को ओत-प्रोत किया है। नारद को परम भक्त कहा जाता है। महर्षि नारद को तपोज्ञानी, महातेजस्वी तथा ज्ञानतृप्त कहा जाता है। नारद द्वारा भक्ति सूत्र मे भगवान की स्तुति के साधन स्वरूप भक्ति उपयोगी विषयों को वृहद रूप से समझाया गया है, और नारद द्वारा भक्तों के विषय मे भी बताया गया है। जिसमे नारायण भक्त प्रहलद, व्यास, शुक्रदेव, वाल्मीकी आदि की कथाओं को भक्ति उदाहरण रूप मे बताया गया है।

सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूप, अमृतस्वरूप च । यल्लध्वासिद्धो भवति,
अमृतो भवति, तृप्त भवति यत्प्राप्य किञ्चिद्वाञ्छति न शोचति न द्वेष्टि न रमते नोत्साही भवति ।
यज्ज्ञात्व। मत्तो भवति स्तब्धो भवति, आत्मारामो भवति, सा भवतिः ।[(1)]

इस श्लोक मे माध्यम से महर्षि नारद मानव द्वारा भगवान की भक्ति के विषय मे बताते है, कि भगवान से प्रेम परमप्रेम का स्वरूप है, अमृत का स्वरूप है, ज्ञान का अर्थ है, सुख तथा अज्ञान का अर्थ है दुखः है, भगवान की भक्ति से प्राप्त सुख का क्षय, नाश, अन्त नही होता क्यों भक्ति किसी सांसारिक वस्तु का फल नही है बल्कि भक्ति तो परमप्रेम रूप व अमृत का स्वरूप है। भक्ति के लाभ से पुरूष कार्य मे सिद्ध होता है, जन्म मृत्यु के भय से मुक्त होता है, तथा भक्ति द्वारा तृप्ति को प्राप्त करता है, भगवान की भक्ति प्राप्त होने के बाद मनुष्य को कोई इच्छा नही रहती शोक व द्वेष नही रहता मनुष्य भक्ति को जानकर आनन्द से भर जाता है। इस प्रकार महर्षि नारद का इस ग्रन्थ मे उपदेशक व उपदेष्टा के रूप मे वर्णन मिलता है।

1:1:1:8 नारद पंचरत्न-यह ग्रन्थ सात्वता संहिता के नाम से विख्यात है, इस ग्रन्थ मे नारद द्वारा श्री हरि राधा की भक्ति, पूजन मन्त्रोंच्चारण इत्यादि के विषय मे चर्चा की गई है। इस ग्रन्थ मे पांच रात्र व साठ अध्याय है। इस ग्रन्थ मे भगवान श्री कृष्ण के बाल्य स्वरूप की व्याख्या की गई है। और श्री कृष्ण की सौम्य गाथा व कथा को बतलाते है, नारद पंचरत्न मे शिव द्वारा नारद को उपदेश प्राप्त होता है, और महर्षि नारद को श्री कृष्ण के

(1) नारद भक्तिसूत्र/श्लोक-1-6/ पृष्ठ-14-25

बाल्य स्वरूप् का झलकियाँ दिखने लगती है। यह ग्रन्थ वैष्णव धर्म और श्री राधा कृष्ण के गुण गान से भरपूर्ण है, महर्षि नारद इस धार्मिक ग्रन्थ के आधार के मूलाधकारी है।

1:1:1:9 स्मृति ग्रन्थों मे नारद स्मृति-'मनु' द्वारा प्राप्त उपदेश के उपरान्त महर्षि नारद जी द्वारा मार्कण्डेय जी को 12000 श्लोक मे उपदेशक मे रूप मे देखा जा सकता है। इस ग्रन्थ मे महर्षि नारद द्वारा न्याय की चर्चा की गयी है। तथा न्याय की विधियों को बताया है। जो दो प्रकार की है-लिखित पत्र व साक्षी और इस ग्रन्थ मे व्याभिचारियों के विषय मे चर्चा की गई है।

1:1:1:10 ज्योतिष शास्त्र मे नारद-महर्षि नारदकृत नारद संहिता को ज्योतिष शास्त्र का आधारमूत स्तम्भ भी माना जाता है, नारद संहिता मे मुख्यतः18 आचार्यो व नारद द्वारा ग्रन्थ की रचना की गयी है। सूर्य, पितामहः, व्यास, वसिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अगिरा, लोमश, पौलिश, च्यवन, यवन, मृगु और शौनक है। नारद संहिता मे 55 अध्याय का प्रतिपादन किया गया है। जिसमे ज्योतिष शास्त्रकारों के उल्लेख के पश्चात् राशियों, ग्रहो, तिथियो, पक्ष के साथ शुभ व अशुभ कार्यों की तिथियों का वर्णन किया है। इसमे वारो के निरूपण के साथ नक्षत्रों के अनुसार कर्म काण्डों का विस्तृत वर्णन किया है। ततपश्चात् पित्रों के तर्पण व पुण्यफल प्राप्ति की चर्चा की गयी है। वैदिक साहित्य से वेदांगों मे महर्षि नारद के विवेचन के बाद या स्पष्ट होता है, कि चारों वेदों, उपनिष्दों, साहित्य, ग्रन्थों इत्यादि मे महातपोज्ञानी नारद भिन्न-भिन्न स्वरूपों मे द्रष्टिगोचर होते है, कहीं नारद मार्गदर्शक कहीं शिष्य कहीं उपदेशक कहीं जिज्ञास से भरपूर भक्त सर्वविद्या से निपूर्ण नारद प्रत्येक स्थान पर महत्वपूर्ण भूमिका मे निभाते हुए हरि भक्ति कार्य मे लीन दिखाई देते है।

1.1.2 रामायण काल से महाभारत काल मे नारद-लौकिक साहित्य से पहले वैदिक साहित्य का वर्णन प्राप्त होता है परन्तु वैदिक साहित्य और लौकिक साहित्य के मध्य आर्ष महाकाव्यों मे रामायण और महाभारत प्राप्त होते है। जिनको भारतीय संस्कृति का प्रेरणादायक आधार माना जाता है।

1:1:2:1 बाल्मीकि रामायण मे महर्षि नारद-भारतीय साहित्य का ऐतिहासिक आर्ष महाकाव्य महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण का वर्णन प्राप्त होता है। जिसमे भगवान राम-सीता के जीवन के प्रत्येक चरण का चित्रण प्राप्त होता है।

''चतुर्विशत्सहस्राणि श्लोकानुमुक्तवानृर्षिः ।
तथा सर्वशतान् पच्चषठ काण्डानि तथोत्तरम् ॥(1)

---

(1) बाल्मीकी रामायण/प्रथम अध्याय/चतुर्थ सर्ग/श्लोक-2

अर्थात्- रामायण को चतुर्विंशति साहस्री संहिता भी कहा जाता है। इसमे सात काण्ड 500सर्ग और 24000 श्लोक मे वर्णन मिलता है। ऋषि बाल्मिकी मे रामायण मे सर्वप्रथम अनुष्टुप छंद का प्रयोग किया तथा बाल्मीकी को ही अनुष्टुप छन्द का अविष्कारक माना जाता है। अनुष्टुप छंद सम अक्षर मे युक्त तथा लघु-गुरू का निवेश इसमे नियमबद्ध है। रामायण के 24000 श्लोक तथा गायत्री मंत्र के 24 अक्षर रामायण के प्रत्येक हजार का प्रथम अक्षर गायत्री मंत्र के प्रारम्भ अक्षर क्रम है। रामायण मे बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड, उत्तरकाण्ड बाल्मीकि रामायण मे महर्षि नारद के दर्शन उपदेशक, प्रेरणादायक, कथावाचक के रूप मे होते है।

"को न्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान कश्च वीर्यवान।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रत:॥
कस्य बिभ्यति देवश्च जातोरोषस्यसंयुगे "॥[1]

बाल्मीकि रामायण बाल्यकाण्ड के प्रथम सर्ग मे बाल्मीकी महर्षि नारद को तपस्या व सर्वज्ञ विद्वान की उपाधि देते हुए पूछते है की ऐसा कौन सा पुरुष है, जो सदाचारी, विद्वान सामर्थशाली, सुंदर क्रोध से परे, अपनी इंद्रियो को अपने अधिकार मे रखने वाला, किसी की निंदा न करने वाला जिसके कुपित होने से देव लोक भी भयभीत होता हो ? महर्षि नारद इन वचनो को सुन कर वाल्मीकि को भगवान श्रीराम के चरित्र का व्याख्यान करते है तथा श्री राम के धैर्यवान, कीर्तिवान बुद्धिवान आदि गुणों का वर्णन करते है, और बाल्मीकि ऋर्षि से इस कथा को विस्तृत रूप मे लिखने के लिए प्रेरित करते है। वाल्मीकि रामायण का श्रेय मूल रूप से महर्षि नारद को प्राप्त होता है। महर्षि नारद सनकादि ऋर्षियों को रामायण की कथा का महत्व बताते हुए कहते है कि रामायण स्मरण से ही मनुष्य सहस्त्र पापों से मुक्त हो भगवान विष्णु लोक मे परमगीत को प्राप्त करता है। तथा रामायण को सुनने व पढ़नें से गंगा स्नान से भी सौ गुना ज्यादा पुण्य का फल प्राप्त होता है तथा इससे यह प्रतीत होता है कि ऋर्षि बाल्मीकि को रामायण महाकाव्य लिखने की प्रेरणा व ज्ञान देवर्षि नारद द्वारा प्राप्त होता है। तथा रामायण की रचना का श्रेय मूल रूप से महर्षि नारद को प्राप्त होता है।

1:1:2:2 महाभारत मे महर्षि नारद-महाभारत भारतीय संस्कृति का आर्ष ग्रन्थ है। तथा इसे शतसाहसी संहिता भी कहा जाता है। इस ग्रन्थ से प्रत्येक मनुष्य को राजनीतिक, धार्मिक तथा दार्शनिक ज्ञान की प्राप्ती होती है। महाभारत को आचार संहिता धर्मशास्त्र, पंचवेद आदि नाम से अलंकृत किया गया है। महाभारत

(1) बाल्मीकी रामायण/प्रथम अध्याय/प्रथम सर्ग/श्लोक-2-4

ग्रन्थ की रचना महर्षि वेदव्यास द्वारा की गयी जिनका मूल नाम कृष्णद्वैपायन था। वेद व्यास ऋषि पराशर व सत्यवती की संतान थे।

महाभारत मे खण्डों (अध्यायों) को पर्व की संज्ञा दी गयी है, तथा 18 पर्व स्वयं मे एक ग्रन्थ के समान है, महाभारत के पर्वो का संक्षिप्त अध्ययन इस प्रकार से है- सर्वप्रथम आदिपर्व 8884 श्लोक मे चन्द्रवंश का पूर्ण वर्णन व कौरवो कि उत्पत्ति। सभापर्व मे 2511 श्लोकों मे ध्रुतक्रीडा, वनपर्व 11664 श्लोक पाण्डवों का वनवास, विराट पर्व 2050 श्लोक, पाण्डवों का अज्ञातवास, उद्योगपर्व 6698 कृष्णदूत बन कौरव सभा मे शांति उद्योग, भीष्मपर्व 5884 गीता उपदेश, युद्ध का आरम्भ, भीष्म शरशैयया द्रोणपर्व 8909, अभिमन्यु वध, द्रोण युद्ध सैप्तिकपर्व 870, पाण्डव पुत्रों का अश्वत्थामा द्वारा रात्रिवध, स्त्रीपर्व 775 स्त्रियों का विलाप, शान्ति पर्व 14732 पितामह द्वारा युधिष्ठिर मोक्षधर्म राजधर्म, अनुशासन पर्व 8000 श्लोक मे नीति व धर्म कथा, अश्वमेधिक पर्व 3320 श्लोक मे युधिष्ठिर द्वारा अश्वमेघ यज्ञ, आश्रमपर्व 8000 श्लोकों मे धृतराष्ट्र गान्धारी वानप्रस्थ, मौसलपर्व 320 श्लोकों मे यादवों का विनाश मूसल द्वारा, महा प्रस्थानिकपर्व 123 श्लोकों मे पाण्डवों की हिमालय यात्रा, स्वर्गारोहण पर्व 209 श्लाकों मे पाण्डवों का स्वर्ग जाना। महाभारत मे महर्षि नारद के बाह्य स्वरूप का वर्णन शल्य पर्व मे मिलता है। नारद वीणाधारी स्फटिक की माला धारण करते हुए मस्तक पर त्रिपुण्ड व सिर पर जटा व शिखा बांधे चरणों मे खडाँऊ पीले वस्त्र कण्ठ मे रूद्राक्ष की माला धारण किए हुए, नारायण नाम का जाप करते हुए वीणा के स्वरों के साथ विचरण करते हुए दर्शनीय है।

जटामण्डल संर्वातः स्वर्णचीरों महमपाः।
हेमदण्डधरो राजन् कमण्डलुधरस्तथा।
कच्छपी सुखशब्दां तां ग्हन वीणां मनोरमाम्।।[1]

अर्थात्- महर्षि नारद जो महातपस्वी जटामण्डल मे मण्डित होने वाले स्वर्णिम चीर को धारण करते है, कमण्ड धारण करते है तथा शब्दों द्वारा सुख प्रदान करने वाली कच्छपी वीणा द्वारा सुख प्रदान करने वाली कच्छपी वीणा द्वारा मनोरम गान करते और नारायण-नारायण का जान करते है ।

नृत्ये गीते च कुश्लो देव ब्राह्मण पूजितः।
प्रकर्ता कलहानां च नित्यं च कलहप्रिय ॥[2]

(1) महाभारत/शल्यपर्व/अध्याय-54/श्लोक-18-19
(2) महाभारत/शल्यपर्व/अध्याय-54/श्लोक-20

महर्षि नारद गीत व नृत्य विद्या मे कुशल है। तथा जिनका सम्मान देवतागण व ब्राह्मण ऋर्षि सदैव करते है। जो कलह प्रिय है, तथा कलह कल्याणकारी है। महाभारत मे महर्षि नारद उपदेशक, दिव्य शक्ति सम्पन्न, परामर्शकर्ता, भूत-भविष्य ज्ञाता, नितिज्ञ, युक्तिप्रदाता, मार्गदर्शक, प्रेरणा स्तोत्रदायक, गोपनीय विषय ज्ञाता, दुखः-शोकहर्ता, सूचना प्रसारक, भक्ति प्रचारक, प्रेरक, त्रिलोकगामी, सहायक, कलहप्रिय किन्तु हितकारी, भ्रान्तिहती, संगीत विशारद आदि रूपों मे दर्शनीय है। उपदेशक रूप मे- भगवान श्रीकृष्ण, देवराज इन्द्र ऋषियों, शुक्रदेव मुनि, ऋषि देवमत, राजाओं को, दुर्योधन को धृतराष्ट्र, भक्त, पुण्डरिक आदि के उपदेशक रूप मे नारद दर्शनीय है।

1.1.3 पुराणों से लौकिक साहित्य मे नारद-पुराण भारतीय सभ्यता का बहुमूल्य कोष है। जो मानव सभ्यता को प्राचीन से पोषित कर रहा है। पुराणों से ही धर्म, इतिहास, कर्मकाण्ड इत्यादि का ज्ञान प्राप्त होता है। मानव संस्कृति सभ्यता का विशुद्ध सरल व उचित ज्ञान पुराणों द्वारा ही सम्भव है। पुराणों को संस्कृति की आत्मा व जीवन मानना उचित होगा। वेदों उपनिष्दों के ज्ञान को मानव समाज के लिए आसान तथा समझाने योग्य बनाने के लिए पुराणों की उत्पत्ति हुयी। जो कि अथर्ववेद मे पुराण वैदिक संहिताओं के बराबर माना गया है।

शिव पुराण के अनुसार-'यस्मात् पुरा हि अनति'(1) अर्थात् पुराण ही प्राचीन काल से निरन्तर जीवन का आधार है।

स्कन्द पुराण के अनुसार-

यो न वेद पुराणानि स वेदात्र न किच्चन।
कतमः स हि धर्मोऽस्ति किंवा ज्ञानं तथा विधम्।।(2)

अर्थात्-मनुष्य पुराण ज्ञान के बिना मनुष्य अज्ञानी होता है तथा उसे धर्म-अर्धम किसी भी बात का र्फक समझ पाना मुश्किल होता है। चार वेद, चार उपवेद, छः वेदांग, पुराण, न्याय मीमांसा और धर्मशास्त्र ये सभी अठारह विधाएं है। इन्ही के आधार पर महाभारत मे सोलह पर्व है। गीता के अठारह अध्याय तथा अठारह हज़ार श्लोक भागवत मे है। इसी कारण पुराण भी अठारह है।

पुराणों मे नारद के बाहरी रूप की चर्चा की गयी है, जिसमे सर्वप्रथम श्रीमद्भवगत पुराण मे महीति वीणा धारण किए, सिर पर शिखा धारण करे हुए उनका तेज मानो सूर्य के तेज के बराबर प्रतीत हो रहा है। महर्षि नारद के आंतरिक स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए भागवत पुराण के दशस स्कन्ध मे कहा गया है, कि अन्तरमन

---

(1) शिव पुराण/प्रथम खण्ड/पृष्ठ-203
(2) स्कन्द पुराण/अवन्त्यखण्ड/अध्याय प्रथम/श्लोक-19

मे संयम, ज्ञान से परिपूर्ण, निष्ठा व भरपूर्ण तथा ज्ञान को निरन्तर बांटते रहने वाले जो पुराणो मे उपदेशों व जिज्ञासा से भावभूत है। महर्षि नारद का व्याख्यान करते हुए नारद को उपदेशक के रूप मे देखा जाता है। पद्म पुराण, ब्रह्म पुराण, भागवत पुराण, गरूण पुराण, वारह पुराण तथा विष्णु पुराण से सम्बन्धित है। तथा इन पुराणो मे नारद को उपदेष्टा अर्थात् उपदेश द्वारा ज्ञान देने वाला कहा गया है। इन्हीं पुराणो मे नारद कहीं ऋषि-मुनि कहीं भक्तों राजाओ तो कहीं असुरों को ज्ञान देते हुए द्रष्टव्य है।

1:1:3:1 ब्रह्म पुराण- इस पुराण मे महर्षि नारद दक्षपुत्रों को हर्यश्व और शब्लाश्व को सृष्टि के विस्तार को समझने और गृहस्थ जीवन से विमुख करने का उपदेश देते दर्शनीय है। ब्रह्म पुराण मे नारद कहीं सूर्य देव से प्रश्न करते है। व देवता की उपासना के उपायों को जिज्ञासापूर्वक समझते तो कहीं महर्षि नारद द्वारा ब्रह्मा जी से मानुष की तीर्थ के विषय मे चर्चा करते हुए दर्शनीय है। ब्रह्म पुराण मे महर्षि नारद सृष्टि के रचनाकार से राजा बलि और 'वामन अवतार' की चर्चा करते दर्शनीय है।

गोदावरी भागीरथी तुंगभद्रा च वेणिका।
तापी पयोष्ठी विन्धयस्य दक्षिणे तु प्रर्कीर्तिता॥
भागीरथी नर्मदा तु यमुना च सरस्वती।
विशोका च वितस्ता च हिमावत्पर्वताश्रिता॥[1]

ब्रह्मा महर्षि नारद को भारतवर्ष का विशेष तीर्थस्थानों व जीवनदायनी-गोदावरी,भागीरथी, तुंगभद्रा, वेणिका, तापी, पयोष्ठी देव नदियों व हिमालय से निकलने वाली नदियों के बारे मे भागीरथी, नर्मदा, समुना, सरस्वती, विशोका, वितस्ता के बारे मे बताते हुए दर्शनीय है। यहाँ महर्षि नारद जिज्ञासु रूप मे जाने जाते है।

1:1:3:2 स्कन्द पुराण- स्कन्द पुराण मे महर्षि नारद भगवान वामन को राजा बलि के यज्ञ का पूर्ण सार बताकर भगवान वामन को पूर्वजन्म और उनको उनके मत्स्य रूप और कच्छप रूप, हिरणकश्यप को नरसिंह अवतार मे वध की कथा का वृतांत सुनाते है। भगवान नारद के स्मरण के पश्चात सारी कथा को तथास्तु करके भगवान वामन अपने कार्य मे पुनः कार्यरथ हो जाते है। इस पुराण मे महर्षि नारद तीर्थ स्थान की यात्रा की विधि व यात्रा मे जाने के नियमों को ऋषि शौनक व अन्य मुनियों को बता रहे है, यात्रा मे भगवान विष्णु की आराधना करने व किसी की भी निंदा न करने की आज्ञा देते है और कहते है, कि मनुष्य को अपनी इंद्रियों को बस मे रखना चाहिए तथा महर्षि नारद अन्य ब्राह्मणों के साथ स्कंद पुराण मे अर्जुन को उपदेश देते है,

(1) ब्रह्म पुराण/अध्याय-70/श्लोक-33-34

और बारह वर्षों से अलग पांडव पुत्र अर्जुन को शुभ समाचार देते हुए दर्शनीय है। स्कन्द पुराण मे वैष्णव खंड मे महर्षि नारद राजा पृथु को कार्तिक माह मे किए जाने वाले व्रत दान तथा पुण्यदान द्वारा राक्षस के उद्धार का वृतांत सुनाते हुए, धर्म उपदेशक के रूप मे दर्शनीय है। तथा राजा अम्बरीष को वैशाख मास मे गंगा स्नान, जल, भोजन, छत्र, पादुका अन्य के दान की महिमा और हेमकांत के उद्धार को वृतांत करते हुए दर्शन प्राप्त होते है। राजा इंदुद्युम्न ने प्रयाग, गंगा, तीर्थ, तपस्या, यज्ञ, दान, उपवास और नियम का उपदेश दिया है। स्कंद पुराण मे प्रभास खंड मे महर्षि नारद असुर राजा बलि से प्रसन्न होकर उनके राज्य को इंद्र द्वारा उच्छेद के बारे मे बताते है, और राजा बलि द्वारा नारद से राजा राज्य प्राप्त करने के प्रश्न पूछते है और नारद पुछे हुए प्रश्नों का उत्तर देते है, और राज करने वाले व्यक्ति के 36 गुणों का वर्णन सुनाते है।

न कार्तिक समो मासो न कृतेन समं युग्म ।

न वेदसदंश शास्त्रं न तीर्थ गड्गयासमम् ॥[(1)]

महर्षि नारद जी द्वारा सृष्टिकर्ता ब्रह्मा द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है, कि कार्तिक मास मे भगवानों मे विष्णु तीर्थ स्थानों मे नारायण से जुड़े तीर्थ को कलयुग मे अति प्रशस्त है। और ब्रह्मा बताते है, कि कार्तिक माह के जैसे कोई माह पुण्य देने वाला नही है। सतयुग के जैसा कोई युग नही है। शास्त्रों मे वेदों के जैसा कुछ नही और तीर्थ मे गंगा श्रेष्ठ है। स्कंद पुराण के नागर खंड मे महर्षि नारद अपनी दिव्य शक्ति और त्रिकाल दृष्टि द्वारा राजा दम्भ के राज्य पाठ के नष्ट होने के कारण व पुर्नजन्म का वृतांत सुनाकर उसे और पुनः राज्य स्थापित करने योग्य उपाय बताते हुए कहते है। वैशाख मास की शुक्ल अष्टमी को हटकेश्वर तथा पताको के नाशक शंखतीर्थ मे सूर्य नारायण की अराधना द्वारा पुनः राज्य प्राप्त करने का उपाय व योग बताते है। और इससे राजा दम्भ को अपने कार्य मे सफलता प्राप्त होती है। स्कंद पुराण के प्रभास खंड मे नारद को दुष्टों के संहार की योजना बनाकर कार्य को पूर्ण करते हुए महिषासुर दैत्य के वध का वृतांत सुनाया है।

एह्मेहि त्व महाविष्णों! महादेवं त्वरान्वितः।

इन्द्रेणसहसर्वैश्च लोकपालैस्त्वरान्वितः॥ [(2)]

इस पुराण मे महर्षि नारद को संवाहक और प्रचारक के रूप मे भी देखा गया है। प्रजापति दक्ष द्वारा शिव का अपमान और सती के आत्मदह की संपूर्ण जानकारी महर्षि नारद द्वारा शिवजी को सारा समाचार सुनाते है, तथा इसी पुराण के महेश्वर खंड मे महर्षि नारद महादेव के संदेश को विष्णु और अन्य देवों तक पहुंचाने का

(1) स्कन्द पुराण/द्वितीय खण्ड/प्रथम अध्याय/श्लोक-37
(2) स्कन्द पुराण/प्रथम खण्ड/23वां अध्याय/श्लोक-35-47

कार्य करते दृष्टिगत हुए और शिव पार्वती विवाह की तैयारियों मे जल्द पहुंचने के लिए कहते है। यह सुन विष्णु अपने लोकपालों के साथ विवाह कार्य संपन्न करवाने के लिए पहुंचते है। इस पुराण के महेश्वर खंड मे महर्षि नारद इंद्र को मार्गदर्शक के रूप मे दर्शन देते है, तथा अग्नि देव के पथ प्रदर्शक के रूप मे भी दर्शनीय है, और पांच अप्सराओं का सती, शाण्डिली की माता का भी मार्गदर्शन करते है। इस पुराण मे महर्षि नारद शिव विवाह मे पार्वती पिता पर्वतराज हिमालय को शिव के गोत्र व कुल के विषय मे समाधान देते है, और शंका का समाधान करते हुए दर्शनीय है, तथा महर्षि नारद शिव महिमा को कहते है।

शिवो नादमयः सत्य नादः शिवमयस्तथा ।
उभयोरन्तंर नास्ति नारदस्य च शिवस्य च ।।[1]

अर्थात् शिव नाद से युक्त है, और नाद शिव मे है तथा नाद और शिव मे भेंद या अंतर नही है, क्योंकि शिव नादमय है। नारद के विभिन्न रूप दर्शित होते है तथा इस पुराण मे महर्षि नारद दुख को हरने वाले तपस्वी रूप मे भी दर्शनीय है। स्कंद पुराण मे काशी खंड मे महर्षि नारद कलहप्रिय दृष्टव्य है, तथा इसी पुराण के प्रभास खंड मे महर्षि नारद भविष्य वक्ता के रूप मे दर्शन प्राप्त होता है। इसमे नारद मद्ररेश की पुत्री के भावी पति के विषय मे भविष्यवाणी करते है। महेश्वर खंड मे महर्षि नारद सर्वगुणों से संपन्न कहा गया है, तथा राजा उग्रसेन के प्रश्नों पर श्री कृष्ण द्वारा महर्षि नारद की साधुता के वृतांत को बताते है। श्री कृष्ण कहते है- प्रजापति दक्ष के शापों से नारद स्वयं को दूर करने मे समर्थ थे परंतु महर्षि नारद ने अपनी साधुता से दक्ष को माफ कर दिया और शाप को स्वीकार कर लिया।

दक्ष ने नारद को शाप दिया था कि नारद सदा संसार व सभी लोकों मे विचरण करते रहेंगे तथा उन्हें कहीं भी ठहरने का स्थान प्राप्त नही होगा तथा दूसरा शाप था कि नारद का स्वभाव चुगली व कलह करने वाला होगा, परंतु दुर्गुणों को गुणों मे परिवर्तित करने वाले महर्षि नारद ने इन शापों को अपने कार्य करने के तौर मे प्रयोग कर लिया। नारद ने शापों के होते हुए भी झूठ नही बोला और कभी भी अपने ध्येय से नही हटे और निरंतर अपनी ईश्वर भक्ति व श्री हरि के कार्यों को निष्ठा पूर्वक करते रहे। महर्षि नारद प्रभास खंड मे सर्वज्ञ के रूप मे दृष्टावान है, तथा नारद नागर खंड मे त्रिलोक गामी होने की पुष्टि है। इसी पुराण के काशी खंड मे महर्षि नारद भक्तों के हितकारी के रूप मे दृष्टयावान है। वैष्णव खंड मे बद्रीनाथ के वृत्तांत को बताते हुए तपस्वी के रूप मे दर्शनीय है। स्कंद पुराण मे नारा द्वारा निर्मित नारेश्वर तीर्थ जिसकी जानकारी मारकंडेय, युधिष्ठिर के

(1) शिव पुराण/द्वितीय खण्ड/अध्याय 48वां/श्लोक-28

संवाद से मिलती है। नारद द्वारा रेवती नदी के तट पर तपस्या द्वारा शिव के वरदान मांगा, जिसमे शिव ने नारद को योग, सिद्धि, अविचल भ्क्ति, शास्त्रों मे पारंगत, स्वेच्छा त्रिलोकों मे विचरण, त्रिकालदर्शी, दिव्यदृष्टि, भगवान दर्शन इत्यादि वरदान मिले।

शिव पुराण पार्वती खंड द्वितीय रूद्र संहिता मे महर्षि नारद पर्वतराज हिमालय की पुत्री को गुरु रूप मे गुरु मंत्र उपदेश देते हुए दृश्यवान है।

सेवितश्च महादेव स्त्वदेव तपसा बिना ।

नान्यं पति हठाद्देवि ग्रहीष्यसि शिवाद्यते ॥[1]

महर्षि नारद देवी पार्वती को गुरु रूप मे कहते है, कि तपस्या से शुद्ध हुई तुमको देवादिदेव महादेव अपनी अर्धांग्नी रूप मे स्वीकार लेंगे परंतु किसी हट मे कभी भी किसी अन्य पुरुष को अपने पति के रूप मे मत स्वीकार करना और इस उपदेश के बाद नारद पार्वती को **"नमः शिवायः"**[2] पंच्चाक्षर मंत्र प्रदान करते है। इसी पुराण मे सृष्टिखंड, युद्धखंड की द्वितीय रूद्र संहिता मे महर्षि नारद जिज्ञासु के रूप मे दर्शनीय है, जो शिव तत्व को जिज्ञासापूर्वक जानना चाहते है। इसी पुराण मे महर्षि नारद के स्वयंवर मे जाने और राजा शीलनिधि की कन्या से मोहित होने, भगवान विष्णु द्वारा मोह भंगकर वानर बनाने क्रोधित हो महर्षि नारद द्वारा भगवान विष्णु को पत्नी वियोग के शाप की कथा का वर्णन है। शिव पुराण मे महर्षि नारद के दक्ष को उपदेश देने व पुत्रो को गृहस्त जीवन से विरक्त करने व शाप मिलने की संपूर्ण कथा का वर्णन है। द्वितीय रूद्र संहिता मे महर्षि नारद शिव पार्वती विवाह की आयोजन मे सूचना व प्रसारक रूप मे दृष्टावान है, शिवपुराण की तृतीय शतरुद्र संहिता मे महर्षि नारद मार्गदर्शक भविष्यवक्ता व बालक गृहपति के भविष्य व भय से रक्षा के उपाय बताने व शिव द्वारा गृहपति को दीर्घायु का वरदान प्राप्त होने की कथा का वर्णन दिया गया है।

शिव पुराण मे महर्षि नारद कलहप्रिय के रूप मे दर्शनीय है, तथा द्वितीय रुद्र संहिता कुमार खंड मे पार्वती के उबटन से उत्पन्न आज्ञाकारी गणेश से शिव का क्रोध व महर्षि नारद द्वारा उत्तेजित कर गणेश बालक का मस्तक काटने तथा पार्वती द्वारा सृष्टि के नष्ट करने और बालक को हाथी मस्तक द्वारा जीवन प्राप्त होने की कथा मे महर्षि नारद कलहकारी होने के साथ कल्याणकारी उद्देश्य को पूर्ण करते दर्शनीय है, तथा कुमार खंड मे नारद पुनः इसमे कलहकारी प्रदर्शित होते है, शिव पार्वती के पुत्रों के विवाह का गणेश का विवाह

---

(1) शिव पुराण/द्वितीय खण्ड/रूद्र संहिता/अध्याय 21/श्लोक-25-29
(2) शिव पुराण/द्वितीय खण्ड/रूद्र संहिता/अध्याय 21/श्लोक-25-29

पहले व कार्तिक माता-पिता से रुष्ट होना व गणेश के प्रथम पूज्य व कार्तिक को पुण्य तथा ब्रह्मचर्य ज्ञान देने वाले देवता के रूप मे दक्षिण मे शैल पर्वत पर विराजमान होने व पुत्र से वियोग मे शिव पार्वती मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग मे उपस्थित होने की कथा का वर्णन है। शिव पुराण मे महर्षि नारद को त्रिलोक गमन के बारे मे ज्ञात होता है तथा द्वितीय रुद्र संहिता मे नारद दया स्वरूप रूप मे शिव गणों को अपने शाप से उद्धार का आशीर्वाद देते है। इसी पुराण मे महर्षि नारद शिव सेवक रूप मे शिव पार्वती विवाह मे महर्षि नारद देवताओं को निमंत्रण देने का कार्य करते हुए शिव दूत रूप मे शिव की कृपा पात्र बनते है। इसी के साथ महर्षि नारद शिव से प्रेरित नारद के रूप मे दर्शनीय है तथा महर्षि नारद देवताओं के सहायक रूप और युद्ध खंड मे शिव तेज से समुद्र पुत्र जालंधर की कथा का वर्णन प्राप्त होता है।

1:1:3:3 मत्स्य पुराण- इस पुराण मे महर्षि नारद वास्तु व विज्ञान के ज्ञाता के रूप मे दृश्यवान है। इस पुराण मे 18 वास्तु वैज्ञानिक अर्थात् इंजीनियरों के नाम प्रस्तुत है।

भृगुरत्रिर्वशिष्ठश्च विश्वकर्मा मयस्त्तथा ।
नारदोनग्रजिच्चवै विशालाक्ष: पुरंदर :॥
ब्रह्माकुमारो नंदीश: शौनको गर्ग एव च ।
वासुदेवौ·निरूद्धश्च तथा शुक बृहस्पति ॥
अष्टादशैत विख्याता वास्तु शास्त्रोपदेशक: ।
संक्षेपेणोपदिष्टंतु मनवे मत्स्य रूपीण ॥(1)

अर्थात्-भृगु, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वकर्मा, शौनक, गर्ग, वासुदेव, अग्निरुद्र, शुक्र और बृहस्पति इत्यादि। इस पुराण मे महर्षि नारद भक्तों के उद्धारकर्ता के रूप मे दर्शनीय है, तथा हिमराज हिमालय की पुत्री पार्वती के हस्त रेखा से भविष्य बताते हुए, शिव से विवाह का वृतांत प्राप्त होता है। इसी पुराण मे महर्षि नारद शिव कार्य को अपने बुद्धि विवेक व वाम्जाल द्वारा अनोपम्या मे पतिव्रत धर्म को भंग कर त्रिपुर का शिव द्वारा नाश संभव करने मे परिपूर्ण भूमिका निभाते है, और सभी देवताओं के लिए महर्षि नारद सहायक रूप मे दर्शनीय है। इस पुराण मे महर्षि नारद भविष्य वक्ता के रूप मे सावित्री व सत्यवान के विवाह की भविष्यवाणी करते हुए, अल्पायु बताते है, और सावित्री द्वारा पतिव्रत से यमराज से प्राण वापस ले आती है, इसका वर्णन प्राप्त होता है। मत्स्य पुराण मे महर्षि नारद को त्रिपुरासुर के मार्गदर्शक के रूप मे भी देखा जाता है। जिसमे महर्षि नारद त्रिपुरासुर को शिव भक्ति, धर्म व अधर्म का ज्ञान देकर शिव भक्ति की प्रेरणा देते हुए दृष्टिगोचर होते है। इसी

---

(1) मत्स्य पुराण/प्रथम खण्ड/पृष्ठ-21

पुराण मे महर्षि नारद देवाधिदेव शिव मुक्ति और भक्ति के पूर्ण होने वाले व्रत के बारे मे पूछते है। जिसमे नंदीकेश्वर शिव चतुर्दशी का व्रत अगहन मास की शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी व चतुर्दशी के व्रत का वृतांत बताते है।

1:1:3:4 अग्नि पुराण- प्रथम अध्याय मे महर्षि नारद प्रवक्ता के रूप मे बाल्मीकि को श्री राम का चरित्र सुनाया, जिसे श्रोता के रूप मे प्राप्त कर महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की जिसकी चर्चा यहां प्राप्त होती है। सर्वप्रथम बाल काण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, युद्ध काण्ड, अयोध्या काण्ड, उत्तरकांड।[(1)] इस पुराण मे महर्षि नारद वक्ता के रूप मे शौनक को विष्णु और अन्य देवों के पूजा के विधान का वर्णन बताते है।[(2)]

1:1:3:5 भागवत पुराण- भागवत पुराण को श्रीमद भगवत पुराण कह पुकारा जाता है। इस पुराण के सप्तम स्कंध मे महर्षि नारद युधिष्ठिर को उपदेश देते दर्शनीय है। उपदेष्ट रूप मे नारद का वर्णन मिलता है। प्रथम स्कंध मे महर्षि नारद ब्रह्मा पुत्र मे दृष्यवान है, तथा सूत जी शौनक ऋषि को भगवान विष्णु के तृतीय अवतार देवर्षि नारद की कथा का वृतांत सुनाते है, और कर्म बंधन की मुक्ति किस प्रकार कर्मों से मिलती है। अर्थात् जिसका वर्णन (नारद पंचरत्न) सात्वत तंत्र का वर्णन करते है ।

यही पर महर्षि नारद युधिष्ठिर के समक्ष अपने पूर्वजन्म का वृतांत बताते है। जिसमे नारद एक सुंदर गंधर्व के रूप मे जन्मित थे, जिनको उपवर्हण नाम से जाना जाता है, और देवताओं के समक्ष लौकिक गीत गाकर शाप के पात्र बनते है। शूद्र कुल मे जन्म लेकर पुनः जन्म मे ब्रह्म पुत्र बन उत्पन्न होते है। प्रथम स्कन्ध व्यास मुनि के मार्गदर्शन करते हुए भागवत पुराण की रचना का ज्ञान देते हुए दशनीय है। प्रथम स्कन्ध मे महर्षि नारद धृतराष्ट्र व गंधारी के प्रसंग मे महापरोपकारी उपदेशक और त्रिकालदर्शी रूप मे दशर्नीय है। चतुर्थ स्कन्ध सूचना प्रसारक के रूप मे यक्ष के यज्ञ मे प्राण त्यागने की सूचना देवाधिदेव महादेव को देते हुए दृष्यावान है। चतुर्थ स्कंध मे महर्षि नारद राजा प्रियव्रत के उपदेशक मे दर्शन मिलते है। चतुर्थ स्कंध मे प्राचीनबर्हि को दुखः के नाश एवं परम आनंद के मार्ग का उपदेश देते हुए दर्शनीय है। तथा चतुर्थ स्कंध मे महर्षि नारद प्रचेताओं को श्रीहरि के पूजन से जीवन को सफल बनाने का उपदेश देते हुए दर्शनीय है। चतुर्थ स्कंध मे महर्षि नारद मंत्रक के रूप मे भक्त ध्रुवएडी को श्रीहरि की आराधना का मार्ग दिखाते हुए " **ॐ नमो भगवते वासु देवाय"** द्वादशाक्षरा मंत्र उपदेश देते हुए दर्शनीय है। चतुर्थ स्कंध मे महर्षि नारद को काल कन्या का शाप मिलता है

---

(1) अग्नि पुराण/अध्याय पाँचवाँ/श्लोक-1-2
(2) अग्नि पुराण/अध्याय बाईसवां/श्लोक-25

तथा नारद राजा प्राचीनबर्हि के उपदेशक तथा कन्या द्वारा शाप का वृत्तांत बताते है।[1] षष्ठम स्कन्द मे चित्रकेतु को मंत्रिपरिषद का उपदेश देते है, जिससे राजा मुंह से दूर व भगवान के परमपद को पाने मे समर्थ होता है। षष्ठम स्कंद मे महर्षि नारद को शाप मिलने की कथा का वृतांत प्राप्त होता है। षष्ठम स्कंध मे महर्षि नारद दक्ष प्रजापति द्वारा शाप प्राप्ति का वर्णन प्राप्त होता है। जिसमे दक्ष प्रजापति नारद को अपना वंश नाशक मानते है और कहते है-

नानुभूय न जानाति पुमान् विषयतीक्ष्णताम्।
निर्विद्येत स्वयं तस्मात्र तथा भित्रधीः परैः॥[2]

मनुष्य के लिए बिना विषय को जाने उसकी कटुता जान पाना अत्यंत कठिन है। स्वयं के दुख से बड़ा कोई दुख या वैराग्य नही होता। जो दूसरों को वहका कर महसूस नही किया जा सकता। षष्ठम स्कन्ध मे महर्षि नारद दिव्यशक्ति से संपन्न तथा चित्रकेतु के पुत्र की मृत्यु पश्चात पुत्र की जीवात्मा का आवाहन कर पुनः शरीर मे आने को कहते है, परंतु जीवात्मा के न आने और अपनी दिव्यशक्ति द्वारा परिजनों के शोक का अंत करते है। तथा नारद वरदान या शाप दे सकते है। सप्तम स्कंध मे महर्षि नारद दिव्यदृष्टा व कथावाचक के रूप मे दृष्टिगोचर होते है। जिसमे नारद शिशुपाल के पूर्वजन्म की कथा सुनाते है। सप्तम स्कंध मे महर्षि नारद द्वारा प्रहलाद क्यादु को उपदेश देते हुए उद्धार का वृत्तांत सुनाया है। सप्तम स्कन्ध भ्रन्ति निवारक के रूप मे शिशुपाल के प्रति युधिष्ठिर के भ्रान्ति का नारा करते हुए दर्शनीय है। दशम स्कंध मे महर्षि नारद श्रीकृष्ण के पिता को उपदेश देते हुए दृष्टव्य है।

कर्मणा कर्मनिहरि एष साधु निरूपितः।
यच्छ्रद्धया यजेद् विष्णुं सर्वयज्ञेश्वरं मखैः॥[3]

अर्थात् कर्म के बंधन से मुक्त होने के लिए सर्वश्रेष्ठ उपाय यज्ञ द्वारा भगवान विष्णु की भक्ति है। दशम स्कन्ध मे वृकासुर के मार्गदर्शक के रूप महादेव ही आराधरा का ज्ञान देते है। अष्टम स्कन्ध मे इन्द्र अन्य देवताओं के पथ प्रदर्शक करते हुए सागर मन्थन की कथा का वृतान्त बताते है। दशम स्कन्ध मे महर्षि नारद श्री कृष्ण के अपनी 16000 रानियों के साथ अलग-अलग रूप मे देखने के लिए उत्सुक्ता से कौतुकप्रिय नारद का दर्शन प्राप्त होता है। ग्याहरवें स्कंध मे महर्षि नारद भगवान के माता-पिता को भगवान के उपदेश देकर मोह

---

(1) भागवत पुराण/चतुर्थ स्कन्द/अध्याय सत्ताईस/श्लोक 21-22
(2) भागवत पुराण/षष्ठम स्कन्द/पंचम अध्याय/श्लोक-41
(3) भागवत पुराण/दशम स्कन्द/अध्याय 84/श्लोक-35

माया से मुक्त होने का मार्ग बताते है दक्ष प्रजापति को पुत्रों को विरक्त कर ग्रहस्थ जीवन से मुक्ति पथ पर अग्रसर करने के लिए शाप देते है।

1:1:3:6 वारह पुराण-वारह पुराण मे महर्षि नारद पुत्र शोक मे राजा निमि को उपदेश देते हुए कष्ट का निवारण करते हुए दृष्टिगोचर है।

देवता सुरगन्धर्वा मानुषा मृगपक्षिणः।
सर्वे कालवंश यान्ति सर्व कालमुदिष्यते॥
जातस्य सर्वभूतस्य कालमृत्येरूपास्थितः।
अवश्यं चैव गन्तव्य कृतान्तविहितः पथः॥[1]

अर्थात्- सभी काल के वश मे होते है। जैसे देवता, असुर, गन्धर्व, मनुष्य, पशु-पक्षी तथा सभी यम के बनाये हुए मार्ग पर अवश्य जाते है। कोई भी अवरत्व को प्राप्त नही है।

नरं पानीयमित्युक्तं तं पितृणां सदा भवान्।
छदाति तेन ते नाम नारदेति भविष्यति।।[2]

वारह पुराण के श्लोक मे महर्षि नारद भगवान विष्णु से उन्हीं के शरीर मे (समाहित) होने को कहते है तब भगवान विष्णु कहते है- हे नारद! तुम इस सृष्टि मे ब्रह्मा के सहत्र युगों तक रहोगे और तुम्हारा अर्विभाव होता रहेगा। हे नारद! तुम सदैव पितरों को जल देने वाले हो जल अर्थात् नार इसलिए तुमको नारद नाम से जाना जाएगा।

1:1:3:7 ब्रह्मवैवर्त पुराण-के ब्रह्मा खण्ड मे महर्षि नारद जिज्ञासापूर्वक ब्रह्मा से श्री कृष्ण की पूजन विधि को जानने की इच्छा करते है।

भक्ष्म कि वाड़प्यभक्ष्य च द्विजांना गृहिंणा प्रभो।
यर्ताना वैष्णवानां च विधवाब्रह्मचरिणाम्।।[3]

महर्षि नारद महादेव शिव से ब्राह्मणों, यात्रियों, वैष्णवों ब्रह्मचारियों के लिए कर्तत्व व भक्ष्य के विषय मे पूछते है। ब्रह्मा खण्ड मे नारद जिज्ञासु के रूप मे विष्णु से गंगा की उत्पत्ति के बारे मे पूछते है मे भगवान बताते है।

गङ्गा गङ्गा यो बूवद्योजनानां शतैरपि।

---

(1) वराह पुराण/अध्याय 185/श्लोक 59-60
(2) वराहपुराण/तृतीय अध्याय /श्लोक-23
(3) ब्रह्मवैवर्त पुराण/प्रथम खण्ड/अध्याय-27/श्लोक-1

मुच्छते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।।(1)

अर्थात्- गंगा गंगा के नाम से जो दूर योजन कहीं स्नान करता है, वह भी अपने पापों से मुक्ति पाकर विष्णु लोक को प्राप्त कर जाता है। इस पुराण मे श्री कृष्ण जन्म खंड मे नारद के विवाह संबंधी कथा का वृतांत प्राप्त होता है तथा विवाह के पूर्वा वृत्तांत इसी पुराण मे देखने को मिलते है।(2)

1:1:3:8 पद्म पुराण- पद्म पुराण के स्वर्ग खंड मे महर्षि नारद पांडवों को उपदेश देते हुए दर्शनीय है तथा महर्षि नारद के मार्गदर्शन का वृतांत प्राप्त होता है । पद्म पुराण के उत्तरकांड मे महर्षि नारद राजा शिवि को हिरणकश्यप वध, नरसिंह अवतार, देवताओं राज्य पुनः प्राप्त के साथ उपदेशक का वृतांत मिलता है। इसी पुराण के उत्तरकांड मे राजा पृथु के उपदेश मे असुर शंख द्वारा वेदों का हरण की कथा सुनाते है, और भगवान विष्णु द्वारा शंखासुर का वध और वेदों के उद्धार का वृतांत सुनाते है। इस पुराण के पाताल खंड मे महर्षि नारद प्रवक्ता के रूप मे राजा अम्बरीष के उपदेश मे भगवान की अराधना द्वारा पापों का नाश करने का उपाय बताते है और मनुष्य के प्रायश्चित को बताया है।

नाहं वसामि वैकुण्डे योगिनां हृदये न वै।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥ (3)

अर्थात्- उत्तर खण्ड मे श्री हरि नारद को बताते है कि हे ! नारद मे ना तो वैकुंठ मे वास करता हूं, ना ही मैं योगियों के हृदय मे वास करता हूं, मैं हर उस जगह वास करता हूं जहां मेरे भक्त मेरा गान कर मुझे याद करते है। पद्म पुराण मे पाताल खंड मे महर्षि नारद शिव के समक्ष जिज्ञासु रूप मे भगवान शिव से जगत हितकारी मंत्रोंपदेश के बारे मे तथा ज्ञान विधि व ध्यान विधि के प्रश्न पूछते है। तब शिव जी द्वारा महर्षि नारद को श्री कृष्ण के द्वारा बताए गए मंत्र व मनुष्य को प्रभु प्राप्ति का मार्ग बताते है, और श्रीकृष्ण द्वारा राधा-कृष्ण की शरण व भक्ति से मनुष्य के साधन प्राप्त करने का वृतांत सुनाते है। उत्तरकांड मे महर्षि नारद महादेव से पुनः जिज्ञासा रूपी भाव के साथ मन्दराचल पर्वत यात्रा जाने और अपने मन मे उत्पन्न प्रश्नों को करते है तो महादेव नारद को भगवान विष्णु के अवतार की कथा का वृतांत सुनाते है, तथा हरि का द्वार 'हरिद्वार' की पुण्य नगरी का अर्थ बताते है और शिव के जटा से उत्पन्न गंगा के महत्व बताते है । अर्थात् महादेव कहते है, जो मनुष्य स्वच्छ मन से सिर्फ गंगा नाम का उच्चारण कितने भी सैकड़ों योजन की दूरी से करता है, वह अपने

---

(1) ब्रह्मवैवर्त पुराण/द्वितीय खण्ड/अध्याय-10/श्लोक-71
(2) ब्रह्मवैवर्त पुराण/द्वितीय खण्ड/अध्याय-129/श्लोक-26
(3) पद्म पुराण/पाताल खण्ड/अध्याय-94/श्लोक-23

सभी पापों से मुक्त हो जाता है और विष्णु लोक मे चला जाता है । महादेव तुलसी की महिमा बताते हुए नारद से कहते है-

यद्येकं तुलसीकाष्ठं मध्ये काष्ठस्य तस्य हि।

दाहकाले भवेन्मुक्ति काटिपापयुतस्य च॥(1)

अर्थात् तुलसी का एक भी काष्ठ (लकड़ी या पत्ता) किसी के दाह संस्कार के समय अन्य लकड़ी के बीच मे मिल जाए तो वह मनुष्य सहस्त्र पापों से मुक्त हो जाता है। तथा गृहस्थ आश्रम को सर्वश्रेष्ठ धर्म बताते हुए, गृहस्थ आश्रम मे रहते हुए दान धर्म करने के महत्व को बताते है। पद्म पुराण के सृष्टि खंड मे महर्षि नारद देवी पार्वती से स्त्री चरित्र के महत्व को समझने की जिज्ञासा प्रकट करते है, तो देवी उन्हें स्त्री चरित्र का वृतांत सुनाती है। उत्तर खंड मे महर्षि नारद सन्देशवाहक के रूप मे श्री कृष्ण से युधिष्ठिर के इंदिरा एकादशी के व्रत व ध्यान दान की महिमा का वृतांत सुनते है। सृष्टि खंड मे महर्षि नारद श्रीराम व शत्रुघ्न के मार्गदर्शक के रूप मे दर्शनीय है। उत्तर खंड मे महर्षि नारद कोमल हृदय व कष्ट को देख चिंतित हो जाते है, तथा दुख से ग्रसित स्त्री को कलियुग मे केशव भक्ति से फल प्राप्ति मार्ग बताते हुए दर्शनीय है। उत्तरखंड मे महर्षि नारद भगवान श्री कृष्ण और राधा के परम भक्त रूप मे श्री राधा कृष्ण के बाल रूप के दर्शन स्वयं को कृपा का पात्र मानते है। सृष्टि खंड मे महर्षि नारद देवी पार्वती के विवाह की भविष्यवाणी करते है। वह शंका से निश्चिंत करते है, और शिव पार्वती का विवाह कराते है। उत्तर खंड महर्षि नारद त्रिकालज्ञ के रूप मे यमराज व धनेश्वर की कथा का वृतांत बताते हुए दर्शनीय है।

1:1:3:9 मार्कंडेय पुराण- मार्कंडेय पुराण के समस्या पर्व मे महर्षि नारद सर्वविद्याचार्य है, जो चिरंजीवी व सनातन धर्म के प्रतिनिधि है तथा विष्णु द्वारा श्रुतियों के रक्षक बनाए जाते है।

कृतः प्रजाक्षेमकृता प्रजासृजा सुपात्रनिक्षेप निराकुलात्मना।

सदाउयोगेऽपि गुरूस्त्वमक्षयो निधिः श्रुतीनां धनसम्पदामिव॥(2)

अर्थात् जिस प्रकार सुपात्र व्यक्ति को धन संपत्ति सौपकर निश्चिंत हो जाते है, उसी प्रकार ब्रह्मा द्वारा श्रुतियों की संपत्ति नारद को ब्रह्मा स्वयं निश्चिंत है और नारद सदा ही रक्षक व उपदेशक रूप मे सर्वविद्याचार्य माने जाते है ।

---

(1) पद्म पुराण/पाताल खण्ड/अध्याय-24/श्लोक-7
(2) मार्कंडेय पुराण/समस्या पर्व/179/221

1:1:3:10 नारद पुराण- महर्षि नारद मंत्रोंदेशक रूप मे दृष्टावान है, जो श्री कृष्ण मंत्रों का ज्ञान देने वाले है नारद पुराण मे प्रारंभ से अंत तक नारद जिज्ञासु रूप मे दर्शनीय है। जहां महर्षि नारद धर्मराज व भागीरथी को धर्म के प्रकार, नरक की पीड़ा व्रत की कथा, ब्राह्मण व क्षत्रियों के सदाचार का वृतांत को सन्यासी के धर्म निरूपण को समझाते है।

1:1:3:11 लिंग पुराण- लिंग पुराण मे भगवान विष्णु के (सुदर्शन चक्र) तम से महर्षि नारद राजा अम्बरीष और पर्वत मुनि की रक्षा करते है, और तम से यह मेरे ही उपासक है, और तीनों भक्तों को छोड़ देने को कहते है।

अम्बरीश्च मद्भक्तरूतथैतौ मुनिसत्तमौ।

अनयोरस्य च तथा हिंत कार्य ययाऽधुना॥[1]

1:1:3:11 भविष्य पुराण- महर्षि नारद उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव के गुरू और उपदेशक के रूप मे भगवान विष्णु को प्रसन्न करने वाले उपाय का ज्ञान देते है, और श्री हरि के दर्शन का वृतांत बताते है।

1:1:3:12 ब्राह्मण्ड पुराण- ब्राह्मण्ड पुराण के उपोद्धात पाद मे महर्षि नारद प्रजापति दक्ष के दस हजार पुत्र हर्यश्व और दस हजार पुत्रों शवलाश्वों को गृहस्थाश्रम से विमुख करते हुए दृष्टिगोचर होते है। [2]

1:1:3:13 वामन पुराण- महर्षि नारद दिव्यदृष्टि से संपन्न ऋषि के रूप मे दर्शनीय है, जो राजा पृथु को अपने पिता के जन्म के बारे मे बता रहे है ।

ततोऽब्रवीन्नारदस्ते ज्ञात्वा दिव्येन चक्षुषा।

मलेच्छमध्ये समुत्पन्नं क्षयकुष्ठसभान्वितम्॥ [3]

अर्थात्- नारद राजा पृथु को अपनी दिव्यदृष्टि से बता रहे है, कि उनके पिता का जन्म मलेच्छो के परिवार मे हुआ है, तथा वह कुष्ठ व क्षय रोग से ग्रसित है।

1:2 पं० नारद कृत संगीत मकरंद के पूर्वाचार्य एवं उनके ग्रन्थ

पं० नारद कृत संगीत मकरंद के पूर्वचार्यों एवं ग्रन्थ के पूर्व का काल वेद काल व भरत काल माना जाता था । संगीत मकरंद से पूर्व संगीत के कई महान ग्रंथो की रचना विद्वानो द्वारा की जा चुकी थी । संगीत मकरंद के पूर्वाचार्यों मे देव और गन्धर्वो के नाम रचयिता के रूप मे आते है जो क्रमश: इस प्रकार है ।

---

(1) लिंग पुराण/उत्तर भाग/पंचम अध्याय/श्लोक-143
(2) ब्राह्मण्ड पुराण/सृष्टि वर्णन /अध्याय-2/श्लोक-18
(3) वामन पुराण/अध्याय-47/श्लोक-29

1:2:1 ब्रह्मा- ब्रह्मा स्वयं सृष्टि के आद्य पितामाह है जो हाथों मे वरमुद्रा, अक्षरसूत्र, वेद तथा कमंडलु धारण करते है मत्स्य पुराण के तृतीय सृष्टि प्रकर मे मत्स्य भगवान ब्रह्मा जी के चार मुख से वेद, अंग, उपांग, तथा पद एवं क्रम की उत्पत्ति के बारे मे बताते है। (1) ब्रह्मांड के अस्तित्व से ही संगीत जुड़ा हुआ है, तथा अनादि आद्य ब्रह्मा ही संगीत का आधार है जो संगीत की उत्पत्ति के कारक व प्रेरक है।

"नाट्यशास्त्रं प्रवक्ष्यामि ब्रह्मणा यदुदहृतम्"(2) भरत मुनि नाट्यशास्त्र के आरंभ मे यह कहते है की मैं भरत ब्रह्मा द्वारा बताए गए नाट्यशास्त्र का मैं कथन करूंगा "नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति के संबंध मे कथा उल्लेखित है की ब्रह्मा ने भरत को नाट्य, नारद को गान, स्वाति को भाण्ड (वाद्य) के लिए नियुक्त किया था ।"(3)

श्रूयतां नाट्यवेदस्य संभवों ब्रम्हनिर्मिति :।(4)

अर्थात् ब्रह्मानिर्मित नाट्यवेद का उद्भव हुआ इस उद्भव का प्रसंग मैं भरत सुनता हूँ नाट्यवेद नाट्यशास्त्र के आदि निरमत स्वयं ब्रह्मा है। एक तंत्री वीणा के आविष्कारक ब्रह्मा ही है तथा इस वीणा को ब्रह्म वीणा व आदि वीणा भी कहा जाता है ।

1:2:2 शिव शंकर –

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद डक्कां नवपञ्चवारम्

उद्धतुकामः सनकादिसिद्धान् एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्(5)

नंदिकेश्वरकाशिका के अनुसार नटराज के नृत्य के पश्चात ही डमरू से चौदह महेशवर सूत्र निकले इन्ही सूत्रो से स्वर वर्ण बने और "रुद्रडमरू भवविवरण के अनुसार अइऽण आदि सूत्र से षडज की उत्पत्ति हुई"।(6) शिव की वीणा को अनालम्बी कहा गया है, संगीत के प्रचलित शिव मत के अनुसार पाँच रागों का उद्भव शिव से हुआ है। शिवमत से प्रभावित ग्रंथ औमापतम के रचनाकार स्वयं शिव है। इस ग्रंथ का सम्पादक के० वासुदेव शास्त्री द्वारा 1957 ई० मद्रास ओर्यंटल सिरीज़ द्वारा प्रकाशित हुआ है, इस ग्रंथ मे 101 तालों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इसमे द्रुत, लघु, गुरु, प्लुत के प्रयोग का वर्णन भी मिलता है ।

1:2:3 स्वाति मुनि- स्वाति मुनि को भरत मुनि के समकालीन कहा गया है जिसका वर्णन भरत कृत नाट्यशास्त्र मे प्राप्त होता है। जिसमे ब्रह्मा जी ने स्वाति मुनि को शिष्यो के साथ वाद्य यंत्र के काम के लिए नियत किया गया है-

---

(1) मत्स्य पुराण/तृतीय सृष्टि प्रकरण/पृष्ठ-57
(2) शास्त्री, बाबूलाल शुक्ल/नाट्यशास्त्र/ प्रथमोऽध्याय/श्लोक-1
(3) पाण्डेय,डॉ०० सुधांशु/ताल रत्नाकर/ पृष्ठ-57
(4) शास्त्री, बाबू लाल शुक्ल /नाट्यशास्त्र/प्रथमोऽध्याय/श्लोक-7
(5) नंदिकेश्वरकाशिका/श्लोक-1/पृष्ठ-3
(6) पाण्डेय, डॉ००सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-57

स्वातिनियुक्तभाण्डस्तु सहशिष्यै: स्वयंभुव। (1)

इसी के साथ स्वाति मुनि का वर्णन नाट्यशास्त्र की रचना के साथ भी प्राप्त होता है ,नाट्यशास्त्र मे वर्णन है की जिस समय भरत मुनि द्वारा वेद, वेदांगों द्वारा उत्पन्न नाट्यशास्त्र की भांति अध्ययन के पश्चात, स्वातिमुनि तथा महर्षि नारद के साथ लोकपाल ब्रह्मा जी के पास नाटक के उपयोग के लिए हाथ जोड़ कर उनके समक्ष पार्थना करते हुये उपस्थित हुये।

स्वातिनारद संयुक्तों वेदवेदांगकरणम् ।

उपस्थिताऽहं लोकेश प्रयोगाथ कृतांजली॥(2)

नाट्यशास्त्र ग्रंथ के अंतर्गत भारत मुनि ने स्वाति मुनि को महामुनि कहा है तथा उनको पुष्कर वाद्यों के आविष्कारक अर्थ अन्वेषक कहा है,तथा उनको वाद्यआचार्य के नाम से संवेदित किया है ।

1:2:4 नंदिकेश्वर अर्थात् तंडु- नंदिकेश्वर को तांडव नृत्य के शिक्षक के रूप मे माना जाता है अभिनव गुप्त के अनुसार नंदिकेश्वर का दूसरा नाम तंडु बताया गया है । नंदिकेश्वर को नंदीभरत के नाम से भी जाना जाता है, नंदी को भरत के समकालीन भी माना जाता है तथा नंदिकेश्वर का काल बृहददेशी के पूर्व भी माना जाता है। नंदिकेश्वर के ग्रंथो मे " नंदी भरतोक्त संकर हस्ताध्याय" नामक ग्रंथ जो हस्त लिखित अपूर्ण रूप मे प्राप्त होता है।(3) भरत को नाट्य की शिक्षा नंदी से प्राप्त हुयी थी जो नंदी को स्वयं शिव से प्राप्त हुयी थी । नंदिकेश्वर द्वारा रचित ग्रंथ माना जाता है जिसमे 15 अध्याय प्राप्त होते है। प्रथम व द्वितीय अध्याय मे असंयुक्त, संयुक्त हस्तमुद्राओ के बारे मे बताया गया है। तृतीय अध्याय मे नृत्य हस्त के भेदो को बताया गया है। चतुर्थ अध्याय मे हस्तभेद, शिरा भेद, द्दस्टीभेद, पादभेद को बताया गया है। पंचम व षष्ठम अध्याय मे स्त्री व पुरुष के स्थान और निरूपण को बताया गया है। सप्तम अध्याय मे 108 तालों का वर्णन किया गया है। अष्टम अध्याय मे आकाशचारी व भूचारी के नौ व सोलह प्रकारो को बताया गया है। नवमं अध्याय मे अंगहारों व दशम अध्याय मे पार्वती के नानार्य हस्तमुद्रा को बताया गया है। एकोदशा अध्याय मे श्रङ्गनाट्य के प्रकार को बताया गया है। द्वोदशा त्रियोदशा सप्तलास्य व चतुर्दशा अध्याय मे गति, चारी, करण,और ताल निरूपण तथा पंचमदशा अध्याय मे पुष्पांजलि और पुजा की विधायी को बताया गया है।(4)

---

(1) शास्त्री, बाबू लाल शुक्ल/नाट्यशास्त्र/प्रथमोऽध्याय/श्लोक-50
(2) शास्त्री, बाबू लाल शुक्ल/नाट्यशास्त्र/प्रथमोऽध्याय/श्लोक-52
(3) शास्त्री, बाबू लाल शुक्ल/नाट्यशास्त्र/प्रथम भाग/पृष्ठ-25
(4) पाण्डेय, डॉ०० सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-76

1:2:5 तुंबुरु ऋषि- महर्षि तुंबुरु को देवर्षि नारद की भांति दिव्य गंधर्व माना जाता है तुंबुरु की वीणा का नाम कलावती है तुंबुरु मुनि की चर्चा लिंग पुराण मे श्री कृष्ण के समक्ष गान करते हुए प्राप्त होती है ।[(1)] संस्कृत साहित्यों व बौद्ध व जैन साहित्यों मे तुंबुरु ऋषि गंधर्व राज के नाम से जाना जाता है ।

उच्चैकारो ध्वनि रुक्षो विज्ञेयो वाताजो बुध: ॥[(2)]

अर्थात् ध्वनि का चतुर्विध वर्गीकरण वातज, पित्तज, कफ़ज, सन्निपात आदि की चर्चा मे पाया जाता है। कांबोज मे मिले अभिलेख मे मे तुंबुरु ऋषि को गंधर्व विद्वान माना गया है।[(3)] तथा उनके चार मुख माने गए है, जिनसे चार ग्रंथो के निर्माण माना जाता है, जो उनके मुख से निकले थे, इनके नाम विनाशिका, नयोत्तर, सम्मोहन और शिरोच्छेद बतालाये गए है।[(4)] शारंगदेव ने तुंबुरु ऋषि को वाद्यों का आचार्य माना है।[(5)] तुंबुरु ऋषि का उल्लेख नाट्यशास्त्र मे भी प्राप्त होता है। तुंबुरु ऋषि द्वारा लिखित किसी ग्रंथ की प्राप्ति नही होती है, परंतु पुराणो मे तुंबुरु ऋषि नाम संगीत प्रसारक के रूप मे उल्लेखित है। हेमचन्द्र द्वारा रचित अभिधानचिंतामणि कोश के (देवकाण्ड 289) मे तंबुरु ऋषि का नाम यक्षों के साथ बताया गया है, तथा तंबुरु ऋषि को तीर्थंकर का उपासक भी बताया है।[(6)]

गन्धर्वै: सहित: श्रीमान् प्रागायत च तुंबुरु:[(7)]

तंबुरु ऋषि को महाभारत के प्रथम पर्व आदि पर्व अध्याय 123 श्लोक 15 मे गंधर्व गायक के रूप तथा गन्धर्वों मे सर्वोत्तम अतिवाह, हाहा, हूहू, और तंबुरु ही माने जाते है।

1:2:6 विशाखिल- विशाखिल का काल भरत के समकालीन माना जाता है, तथा कुछ विद्वानो को विशाखिल द्वारा रचित ग्रंथ प्राप्त था ऐसा तथ्यो के आधार पर जान पड़ता है। दामोदर गुप्त (काल 800 ई० शती)के अनुसार कुट्टनीमतम के श्लोक123 मे विशाखिल का विवरण प्राप्त होता है ।[(8)] वामन के अनुसार काव्यालंकारसूत्रवृति मे विशाखिल की कई कलाओ का विवरण प्राप्त है।[(9)]

---

(1) लिंग पुराण/पृष्ठ-74/ श्लोक-6,7
(2) संगीत मगज़ीन/फरवरी 1970/पृष्ठ-
(3) पाण्डेय, डॉ० सुधांशु/ताल रत्नाकर/ पृष्ठ-71
(4) सिंह, ठाकुर जयदेव/भारतीय संगीत का इतिहास/पृष्ठ-273
(5) शारंगदेव/संगीत रत्नाकर/श्लोक-6-19
(6) सिंह,ठाकुर जयदेव/भारतीय संगीत का इतिहास/पृष्ठ-273
(7) सिंह,ठाकुर जयदेव/भारतीय संगीत का इतिहास/पृष्ठ-273
(8) सिंह,ठाकुर जयदेव /भारतीय संगीत का इतिहास/पृष्ठ-278
(9) सिंह,ठाकुर जयदेव /भारतीय संगीत का इतिहास/पृष्ठ-278

1:2:7 विश्वावसु- विश्वावसु का महाभारत मे गंधर्व राज व नृत्य मे अर्जुन के गुरु के रूप मे उल्लेख प्राप्त होता है। इनकी वीणा का नाम बृहती वीणा था।[(1)] मतंग मुनि द्वारा इनका वर्णन श्रुति व स्वर के संबंध मे किया गया है। तथा संगीत रत्नाकर के टीकाकार कल्लीनथ द्वारा भी इनका वर्णन प्राप्त होता है।

1:2:8 अर्जुन- अर्जुन का नाम श्रीकृष्ण के सखा युधिष्टिर के भ्राता के रूप मे जाना जाता है। तथा विश्वावसु के शिष्य के रूप मे जाना जाता है। ऐसा माना जाता है, कि अर्जुन को कंठ संगीत, वीणा वादन मे पूर्ण अधिकार प्राप्त था तथा नृत्य मे भी कुशल थे। अर्जुन जब अज्ञातवास मे थे तब राजा विराट की पुत्री उत्तरा को नृत्य व संगीत की शिक्षा देने के लिए "वृहन्नलला" नाम रखा था, और उसको संगीत की शिक्षा प्रदान की थी।[(2)]

1:2:9 अश्मचुट्ट तथा नखकुट्ट- अश्मचुट्ट तथा नखकुट्ट दोनों आचार्यों का वर्णन भरतपुत्र के रूप मे नाट्यशास्त्र मे प्राप्त होता है।[(3)] अश्मचुट्ट तथा नखकुट्ट के नाट्य प्रसंगो को सागरनंदी द्वारा अपनी नाट्यशास्त्रीय कृतियों मे उद्घृत किया गया है, तथा कविराज विश्वनाथ द्वारा अपने ग्रंथ साहित्यदर्पण मे भी इन दोनों आचर्यों के श्लोको को उद्घृत किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है, की इन दोनों आचार्यों के नाट्यशास्त्रीय ग्रंथ विद्यमान है।

1:2:10 बादरायण तथा शतकर्णी- बादरायण का उल्लेख भरत कृत नाट्यशास्त्र मे भरत पुत्र के रूप मे प्राप्त होता है तथा शतकर्णी का शालकर्णी अभिधान भी भरतपुत्रों की सूची मे उल्लेख प्राप्त होता है, नाट्यलक्षणरत्नकोष मे बादरायणी शतकर्णी के मतों से उद्गरित से इनके नाट्य विद्या के आचार्य होने के साक्ष्य प्राप्त होते है ।[(4)]

1:2:11 भरत कृत नाट्यशास्त्र- भारतीय के इतिहास मे भरत के नाम से अनेक व्यक्ति प्रसिद्ध है जिनमे सर्वप्रथम दुष्यंत व शकुंतला पुत्र भरत, भगवान राम के अनुज भरत, जैन तीर्थंकर ऋषभदेव पुत्र भरत इसके अतिरिक्त जड़ भरत का भी वर्णन भारतीय संगीत मे मिलता है इनका संबंध नाट्य कला से नही है तथा जिन भरत मुनि का संबंध नाट्यशास्त्र से है वह ब्रहमा के पुत्र है। इन्द्रदेव के कहने पर जब ब्रह्मा जी ने नाट्य वेद की रचना की तो उसके प्रस्तुति कारण के लिए भरत मुनि को उत्तरदायित्व सौपा। भरतमुनि के शतपुत्र नाट्य कला मे निपूर्ण थे। नाट्यशास्त्र की रचना काल के विषय मे विद्वानों द्वारा बहुत मतभेद प्राप्त होते है। कुछ

---

(1) बसंत/संगीत विशारद/ पृष्ठ-16
(2) बसंत/संगीत विशारद/ पृष्ठ-16
(3) शास्त्री, बाबू लाल शुक्ल/नाट्यशास्त्र/प्रथम भाग/पृष्ठ-26
(4) शास्त्री, बाबू लाल शुक्ल/नाट्यशास्त्र/प्रथम भाग/पृष्ठ-26

विद्वान इसका रचना काल ई० पू० पाँचवीं सदी से लेकर तीसरी सदी तक मानते है। इसका सबसे प्रमुख मत मनमोहन घोष का माना जाता है। प्रो०घोष द्वारा छंदशास्त्र, खगोलशास्त्र, संगीतशास्त्र आदि ऐसे साक्ष्यों को आधार मान कर नाट्यशास्त्र का रचनाकाल 500 वर्ष ई०पू० माना जाता है।

नाट्यशास्त्र केवल भारतीय नाट्य विद्या का ही नही अपितु संगीत, नृत्य, गान,वाद्य, छंद, अलंकार,ताल आदि अनेक विधाओं के ज्ञान से पूर्व ग्रंथ है, इसलिए इसे पंचमवेद कहने का एक साक्ष्य यह है कि त्रेतायुग मे लोग काम, क्रोध, द्वेष मे लिप्त थे उनकी ऐसी दशा देख इन्द्र के साथ सभी देवताओं ने ब्रह्मा जी से प्रार्थना की हे ! ब्रह्मदेव लोक मनोरंजन के लिए ऐसा उपाय चाहते है जिसको देख सुन कर लोग इस अवस्था से बाहर आ जाए इन्द्र देव के वचन सुन ब्रह्मा जी नें ध्यान अवस्था मे "वेदों का स्मरण किया और ऋग्वेद से पाठ्य सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय तथा अर्थववेद से रस ग्रहण किया इन सभी के संकलन से पंचमवेद की रचना की जो नाट्यशास्त्र कहलाया ।[(1)] इस पंचमवेद का निर्माण कर भरतमुनि को ज्ञान दिया तथा इसके पश्चात भरतमुनि द्वारा यह ग्रंथ नाट्यवेद 36 अध्याय मे विभक्त किया गया जिसमे कुल 36 अध्याय है और 28 से 33 तक संगीत का वर्णन प्राप्त होता है।

1:2:12 दत्तिल (दत्तिलम्**)** - भरत कृत नाट्यशास्त्र के अनुसार दत्तिल महर्षि भरत के पुत्र एवं शिष्य थे। दत्तिल का समय पाँचवीं शताब्दी माना जाता है। भरत द्वारा गंधर्व शास्त्र का तत्वज्ञ बताया ।[(2)] दत्तिल के समय के विषय मे ठोस प्रमाण नही प्राप्त होते है, परंतु "दत्तिल नामक ग्रंथ त्रिवेन्द्रम संस्कृत सिरीज़ द्वारा प्रकाशित हुआ तथा इसके संपादक साम्ब स्वामी शास्त्री तथा अँग्रेजी टीकाकार श्री मुकुन्द लाठ जी है। जिनके द्वारा दत्तिलम ग्रंथ की विस्तार से टीका की जो सन 1978 ई० इमपैक्स इंडिया नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है।"[(3)] दत्तिल द्वारा दत्तिलम ग्रंथ अनन्तरायन, संस्कृत ग्रंथावली के अंतरगर्त प्रकाशित हुआ ।[(4)] दत्तिलम ग्रंथ मे 244 श्लोक तथा 109 श्लोक ताल संबंधी प्राप्त होते है। जिसमे अथतालं प्रवक्ष्यामि कहते हुए प्रारम्भ किया है जिसमे कला, पात, पादभाग, मात्रा परिवर्तन,वस्तु विदारी, अंगुलि, पाणि,यति आदि ताल के अनिवार्य परिचय देते हुए दत्तिल ने आवाप, निष्काम, विक्षेप, प्रवेशक, शम्या, ताल, सान्निपात का उल्लेख किया है ।[(5)] दत्तिल ने पाणी के तीन प्रकार सम, उपर्यर,पूर्व बताए है " समोपर्यवपूर्वस्तु पाणिस्त्रिविध इष्यते"[(6)] दत्तिल

---

(1) शास्त्री,बाबू लाल शुक्ल/नाट्यशास्त्र/प्रथमोऽध्याय/श्लोक-17
(2) पाण्डेय,डॉ०० सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-73
(3) वनिता,वेणु/तबला ग्रंथ मंजूषा/पृष्ठ-20-21
(4) पाण्डेय,डॉ०० सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-73
(5) पाण्डेय,डॉ० सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-21
(6) दत्तिल/दत्तिलम्/श्लोक-152/पृष्ठ-18

ने तीन मार्ग मे चित्रा मार्ग के तीन प्रकार बताये है तथा यति के तीन प्रकार समा, स्त्रोतोगता, गोपुच्छा बतायी है परंतु इसके लक्षण नही बताए है।

लययांत यति: प्रोक्ता चित्रादि (षु) यथाक्रमम्

समा स्त्रोतोगता चैव गोपुच्छा च यथाक्रमम्॥[(1)]

इनके अतिरिक्त चार खंडिकाएँ पाणिका, पंचपाणि, चार रीतियाँ और ध्रुवमार्ग के साथ समाप्त किया है।[(2)] दत्तिलम् मे दो खंड है जो इस प्रकार है- प्रथम खंड मे स्वर, श्रुतियों, ग्राम, तानो, मूर्छनाओं आदि के बारे मे बताया गया है। द्वितीय खंड का आरंभ 109 श्लोक के पश्चात होता है। ताल से संबन्धित कला, पाद, पदभाग, अंग, लय, यति, पाणि, चच्चपुट, चच्चतपुट, आदि के विषय मे इस प्रकरण मे उल्लेख है।[(3)]

1:2:13 मतंग (वृहददेशी**)-** मतंग एक पौराणिक ग्रंथकार माने जाते है, जिनका नाम ग्रंथकारों मे बड़े सम्मान से लिया जाता है। मुनि मतंग का उल्लेख रामायण, महाभारत, मतंगलीला, रघुवंश आदि ग्रंथों मे मिलता है। मतंग द्वारा रचित ग्रंथ वृहददेशी है, जो संगीत विषय का सर्वप्रथम सर्वश्रेष्ठ प्रमाणिक ग्रंथ है। मतंग का काल रुद्रट के बाद नवी शताब्दी मे रहा होगा ।[(4)] मतंग द्वारा वृहददेशी की रचना की गई जिसमे 511 श्लोक है, जिसमे आठ अध्याय है, तथा ताल तथा वाद्यों पर विचार किया गया है।[(5)] मतंग के काल के विषय मे विभिन्न विद्वानों के मत प्राप्त होते है। महा महोपाध्याय पी० वी० काणे के अनुसार मतंग का काल 750 ई० के पहले का है। प्रो० रामकृष्ण कवि के अनुसार मतंग का काल नवी शताब्दी के मध्य होगा । डॉ अरुण कुमार सेन के अनुसार मतंग का काल पांचवी शताब्दी माना जाता है। स्वामी प्रज्ञानंद के अनुसार मतंग का काल पांचवी शताब्दी से सातवीं शताब्दी के मध्य माना जाता है। उमेश जोशी के अनुसार मतंग का काल छठी शताब्दी का उत्तरार्ध सातवीं शताब्दी का पूर्वार्ध माना जाता है। जनश्रुति के अनुसार मतंग का काल छठी शताब्दी का माना जाता है तथा अनेक मतों के अनुसार मतंग द्वारा वृहददेशी का काल आठवीं सदी भी माना जाता है।[(6)] मतंग कृत वृहददेशी मे तालाध्याय का उल्लेख नही प्राप्त होता है, परंतु इस ग्रंथ मे ताल, मात्रा का उल्लेख प्राप्त होता है साथ ही वृहददेशी मे निबद्ध, अनिबद्ध, नाद, वर्ण, राग, ग्राम आदि का उल्लेख मुख्य रूप से मिलता है। वृहददेशी के प्रथम अध्याय मे देशी प्रकरण, श्रुति प्रकरण, स्वर प्रकरण, ग्राम प्रकरण,

---

(1) दत्तिल/दत्तिलम्/श्लोक-154-155/पृष्ठ-18
(2) वनिता,वेणु/तबला ग्रंथ मंजूषा/पृष्ठ-21
(3) काव्या',डॉ० लावण्य कीर्ति सिंह/भारतीय संगीत ग्रंथ/पृष्ठ-65
(4) पाण्डेय, डॉ० सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-86
(5) वनिता,वेणु/तबला ग्रंथ मंजूषा/पृष्ठ-22
(6) वनिता,वेणु/तबला ग्रंथ मंजूषा/पृष्ठ-22

मूर्छना प्रकरण, वर्णालंकार प्रकरण पाद कथा गिति प्रकरण है।[1] द्वितीय अध्याय मे जातियों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है, जिसमे 18 जातियां बताई गई है। तृतीय अध्याय मे मतंग ने राग की स्पष्ट व्याख्या की है जिसमे ग्राम रागों शुद्ध रागों का वर्णन विस्तृत रूप से किया है। चतुर्थ अध्याय मे रागों के भेद तथा पंचम अध्याय मे रागों के वर्ग रगांग, भाषांग और क्रियांग का उल्लेख किया है षष्ठम अध्याय मे प्रबंध की चर्चा की है वृहददेशी ग्रंथ नारद व मतंग का संवाद के रूप मे देखा जाता है।

1:2:14 कोहल (कोहलमतम्**)** – कोहल का नाम भरत के शतपुत्रों मे लिया जाता है जिसका स्पष्ट विवरण नाट्यशास्त्र के श्लोक मे प्राप्त होता है ।

पुत्रानध्यापयाभास प्रयोगं चापि तत्त्वत: ।

शाण्डिल्यं चैव वात्स्यं च कोहलं दत्तिलं तथा ॥[2]

कोहल भरत के शतपुत्रों मे से मूर्धन्य स्थान रखते है। कोहल ने भरत के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। कोहल के अनुसार श्रुतियाँ अनंत है, कोहल द्वारा रचित ग्रंथ कोहलमतम प्राप्त है, जो एक छोटी पुस्तक रूप मे उपलब्ध होता है। कोहल के दो ग्रंथताललक्षणम् और कोहल रहस्यम का उल्लेख मद्रास की हस्तलिखित सूची मे 12992 लिखित है। पंडित ठाकुर जयदेव के अनुसार कोहल को भारत के समकालीन माना जाता है ।[3] कोहल ग्रंथ संगीत मेरु भी माना जाता है। इसमे प्रोफेसर रामकृष्ण कवि के अनुसार संगीत के मेरु व ताल के अध्याय भी उपलब्ध होते है।[4] इस ग्रंथ को कोहल के मतों का संग्रह भी माना जाता है। कोहलरहस्य मे कोहल और मतंग का संवाद प्राप्त होता है।

1:2:15 शार्दुल (हस्तभिनय**) -** शार्दुल के समय काल के विषय मे विद्वानों के मतभेद प्राप्त होते है। प्रोफेसर रामकृष्ण कवि के अनुसार शार्दुल का काल पांचवी छठी शताब्दी का है।[5] शार्दुल का ग्रंथ हस्तभिनय है जिसमे हस्त अभिनय की चर्चा प्राप्त होती है। यह ग्रंथ वर्तमान मे उपलब्ध नही है। मतंग और शारंग देव द्वारा इनके मतों की चर्चा की गई है।

1:2:17 कश्यप- कश्यप को कोहल के समान भरत के समकालीन माना जाता है। आचार्य अभिनव गुप्त कश्यप को भरत के समान ही मानते है।[6] भरत कालीन शास्त्रकारों मे मुनि कश्यप का नाम विशेष रूप से

---

(1) 'काव्या',डॉ० लावण्य कीर्ति सिंह/भारतीय संगीत ग्रंथ/पृष्ठ-76-77
(2) सिंह, ठाकुर जयदेव/भारतीय संगीत का इतिहास/पृष्ठ-274
(3) सिंह,ठाकुर जयदेव/भारतीय संगीत का इतिहास/पृष्ठ-274
(4) पाण्डेय, डॉ० सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-73
(5) आचार्य वृहस्पति/भरत का संगीत सिद्धान्त/पृष्ठ-296
(6) शास्त्री, बाबू लाल शुक्ल/नाट्यशास्त्र/प्रथम भाग/पृष्ठ-25

आता है। मतंग द्वारा कश्यप या काश्यप, वृद्ध कश्यप के मत का उल्लेख प्राप्त होता है, वृद्ध कश्यप के द्वारा 15 स्वर प्रयोजन जिसमे षडज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, धैवत, निषाद उतकृष्ट पंचम, अन्नी धैवत, काकली अंतर, साधारण षडज, साधारण मध्यम, साधारण गांधार और कौशिक निषाद है।[(1)]

1.3 पं० नारद कृत संगीत मकरंद के समकालीन आचार्य एवं उनके ग्रन्थ

पं० नारद कृत संगीत मकरंद के समकालीन आचार्यो व ग्रंथकारो मे यष्टिक, रुद्रट व अभिनव गुप्त आदि के नाम का वर्णन प्राप्त होता है जो इस प्रकार से है ।

1:3:1 यष्टिक-यष्टिक द्वारा यष्टिक संहिता की रचना मानी जाती है, जो वर्तमान मे उपलब्ध नही है। मतंग द्वारा यष्टिक संहिता के श्लोक की चर्चा व श्लोक को प्रतिपादित भी किया गया है। यष्टिक द्वारा देशी रागों के तीन भेद भाषा, विभाषा, अंतरभाषा तथा श्रुति मत श्रुतिक, षटश्रुतिक, सप्त श्रुतिक को भी बताया गया है ।[(2)]

1:3:2 रुद्रट– रुद्रट का समय काल 9वीं शताब्दी माना जाता है रुद्रट को शातानन्द के नाम से जाना जाता है तथा इनको सामवेदी ब्राह्मण भी कहा जाता है ।[(3)]

1:3:3 अभिनव गुप्त(अभिनव भारती**)** -अभिनव गुप्त को शंकराचार्य के 200 वर्ष बाद का माना जाता है। अभिनव गुप्त का काल ई० शताब्दी 950 से ई० शताब्दी 1025 तक माना जाता है।[(4)] जिसका उल्लेख अभिनव गुप्त कृत कामस्तोत्र, भैरवस्तोत्र तथा बृहती विमर्शिनी मे प्राप्त होता है। अभिनव गुप्त के पूर्वज कन्नौज (उत्तर प्रदेश) के निवासी थे। परंतु अभिनव गुप्त कश्मीर के निवासी थे। अभिनव गुप्त का जन्म अत्रीगुप्त के वंश मे हुआ था। इनके पिता नरसिंह गुप्त था जो "चुखुलका" के नाम से विख्यात थे। अभिनव गुप्त की माता का नाम विमलकला था जिनका स्वर्गवास अभिनव गुप्त के बालक काल मे ही हो गया था। अभिनव गुप्त ने अपना सारा जीवन शिव तथा ग्रंथों की रचना मे समर्पित कर दिया था।

अभिनव गुप्त प्रतिभा से संपन्न विद्वान थे जिनके द्वारा काव्य, नाट्य, संगीत, मंत्र, तंत्र, तथा योग के ज्ञाता थे। इन सभी विषयो पर उनका अधिकार था सभी छोटे बड़े ग्रंथ मिला कर 41 ग्रंथों की रचना की थी।[(5)] इन्हीं मे से महान ग्रंथ नाट्यशास्त्र पर टिका लिखी जिसका नाम अभिनव भारती था। अभिनव गुप्त को स्वयं संगत, साहित्य, दर्शन का ज्ञाता माना जाता है,और वह स्वयं वीणा बजाते थे। अभिनव गुप्तद्वारा नाट्यशास्त्र की बहुत

---

(1) आचार्य वृहस्पति/भरत का संगीत सिद्धान्त/पृष्ठ-295
(2) आचार्य वृहस्पति/भरत का संगीत सिद्धान्त/पृष्ठ-295
(3) आचार्य वृहस्पति/भरत का संगीत सिद्धान्त/पृष्ठ-298
(4) पाण्डेय, डॉ० सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-94
(5) पाण्डेय,डॉ० सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-95

ही विशद रूप से व्याख्या की है जो किसी मौलिक ग्रंथ से कम नही है। अभिनव गुप्त की अभिनव भारती की पांडुलिपि मालाबार के कुछ स्थानों मे मलयालम अक्षरों मे ताड़पत्र पर लिखी हुई प्राप्त हुई जिसको 1918-1919 ई० मे देवनागरी लिपि मे तैयार करवाया गया जो वर्तमान मे मूलप्रति के रूप मे टीकासहित गायकवाड़ ओरिएंटल सिरीज़ बड़ौदा द्वारा प्रो० रामकृष्ण कवि के सम्पादन मे अभिनव भारती चार भागों मे प्रकाशित है, जिसके अतिरिक्त नाट्यशास्त्र की कोई टीका नही उपलब्ध है।(1)

1:4 पं० नारद कृत संगीत मकरंद के परवर्ती आचार्य एवं उनके ग्रन्थ

पं० नारद कृत संगीत मकरंद के परवर्ती आचार्यो व ग्रंथकारो मे नान्यदेव कृत सरस्वती हृदयलंकार, हरीपाल कृत संगीत सुधाकर, सोमेश्वर कृत अभिलाष चिंतामणि, जयन कृत नृत्यरत्नावली, पार्शवदेव कृत संगीत समयसार तथा शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर आदि आधार ग्रंथो व विभिन्न ग्रंथकारो के नाम आते है, जो इस प्रकार है।

1:4:1 नान्यदेव कृत (सरस्वती हृदयलंकार) (भरत भाष्यम)-नान्यदेव का काल सन 1097 से 1133 तक था जो संगीत का स्वर्ण युग कहलाता है। 9 वीं शताब्दी से 10 वीं शताब्दी के मध्य नान्यदेव द्वारा रचित ग्रंथ भरत भाष्यम है। जिसमे 7000 श्लोक है। भरत भाष्यम की पांडुलिपि ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट पुणे मे उपलब्ध है।(2) इस ग्रंथ को सरस्वती हृदयालंकार के नाम से भी जाना जाता है, इसमे 17 अध्याय है, जिनमे राग, जाति, प्रबंध आदि की चर्चा की गई है। इसका प्रकाशन 1961 और 1976 मे इंदिरा कला विश्वविद्यालय खैरागढ़ के शोध विभाग द्वारा चेतन देसाई ने दो खंडों मे किया था।(3) इसमे तालाध्याय व वाद्यध्याय है, जिसमे चच्चपुट आदि चित्र आदि मार्गों के द्वारा ताल की चर्चा की गई है।

1:4:3 शारंगदेव (संगीत रत्नाकर)– शारंगदेव कश्मीरी ब्राह्मण थे इनका समय काल 1210-1250 अर्थात् 13 वीं शताब्दी का पूर्वार्ध था।(4) श्री सोढल के पुत्र शारंगदेव वृष गण गोत्र मे उत्पन्न हुए थे जिनको सिंघण दरबार मे "श्री करणाधिपति "(5) के उपनाम से जाना जाता था। शारंगदेव का नाम नि:शक शारंगदेव था यह संगीत व आयुर्वेद के जानकार थे। द० भारत मे 13 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध मे संगीत रत्नाकर ग्रंथ की रचना पंडित शारंगदेव द्वारा हुई जिसको भारतीय संगीत का दूसरा आधार ग्रंथ माना जाता है। भारतीय संगीत मे

(1) पाण्डेय,डॉ॰ सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-96
(2) वनिता,वेणु/तबला ग्रंथ मंजूषा/पृष्ठ-23
(3) वनिता,वेणु/तबला ग्रंथ मंजूषा/पृष्ठ-23
(4) 'काव्या',डॉ०लावण्य कीर्ति सिंह/भारतीय संगीत ग्रंथ/पृष्ठ-115
(5) पाण्डेय, डॉ० सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-113

700 वर्षो से इस के आधार पर संगीत को देखा जाता है, इसमे सात अध्याय है, तथा इसको सप्तध्यायी भी कहा जाता है। जिसके अंतर्गत गायन, वादन, नृत्य तीनों विधाओं का विस्तृत वरना देखने को मिलता है। शारंगदेव ने संगीत रत्नाकर का निर्माण नाट्यशास्त्र, वृहददेशी आदि को आधार मानते हुए किया गया है।[(1)] संगीत रत्नाकर के प्रथम अध्याय स्वरगताध्याय इसमे श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्छना, तान ,जाति आदि की चर्चा है। द्वितीय अध्याय रागविवेकाध्याय इसमे ग्राम राग, उपराग, भाषा-विभाषा, आदि की चर्चा है। तृतीय अध्याय प्रकीर्णा अध्याय इसमे वाग्गेयकार, गायक के गुण दोष की चर्चा है। चतुर्थ अध्याय प्रबंधाध्याय इसमे मार्गी, देशी, निबद्ध, अनिबद्ध आदि की चर्चा है। पंचम अध्याय तालध्याय इसमे 120 तालों के नाम रूप व लक्षणों को बताया है। चाचपुट, षटपितापुत्रक, चंचत्पुट, कला, देशी ताल ,क्रिया, यति, ग्रह, धातु, सशब्द, निशब्द क्रिया, प्रस्तार का वर्णन किया तथा ताल के दश प्राणों का विस्तृत वर्णन तथा ताल शब्द की व्युत्पत्ति बताते हुए विस्तार से चर्चा की गई है। छठे अध्याय वाद्याध्याय मे वाद्यों का वर्गीकरण तथा वादन विधि की चर्चा की गई है। तथा सातवें अध्याय नृत्याध्याय मे अंग, प्रतयंग, 108 करण, नवरस के भावों की चर्चा की गई है।[(2)]

1:4:4 आचार्य पार्श्व देव (संगीत समय सार)-आचार्य पार्श्व देव जैन दिगंबर थे तथा संगीत समय सार जैन मत का प्रसिद्ध व प्राचीन ग्रंथ है। इसके पश्चात सुधाकलश का संगीतोपनिष्त्सारोद्धार भी जैन मत का संगीत ग्रंथ है पार्श्व देव का समय काल 13वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाता है। पार्श्व देव को शारंग देव के समकालीन माना जाता है। "आचार्य पार्श्व देव के पिता आदिदेव तथा माता गौरी थी और इनका गोत्र "श्री कंठ" था।[(3)] आचार्य पार्श्व देव द्वारा रचित ग्रंथ संगीत समय सार मे नौ अध्याय है। छठे अध्याय षठाधिकरण मे वाद्यों का उल्लेख प्राप्त होता है तथा चार प्रकार के आतोघनानते हुए तत् अर्थात् तार युक्त वाद्य, अवनद्ध अर्थात् पुष्कर वाद्य, घन अर्थात् कांस्य के ताल वाद्य, सुषिर वाद्य अर्थात् वायु व छिद्र युक्त वाद्य का वर्णन है।[(4)] सातवाँ अध्याय सप्तमधिकरण मे ताल शास्त्र, ताल का स्वरूप, ताल उद्देश, ताल के लक्षण, क्षण, लव, काष्ठ आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है। आठवाँ अध्याय जिसमे ताल विवेचन के साथ काल, क्रिया, कला, लय, यति को बताया गया है। चच्चत्पुट, चाचपुट, षटपितपुत्रक, उद्‌घट्ट, सिंहलीला, गजलीला बीस ताल मे लघु, गुरु आदि के साथ 108 तालों के नाम का विस्तृत रूप से वर्णन किया है।[(5)] अंतिम अध्याय मे प्रस्तार द्रुत संख्या लघु उद्दीष्टम् के लक्षणों की चर्चा है।

---

(1) गुप्ता, निशी/ताल शास्त्र का सैद्धांतिक पक्ष/पृष्ठ-26
(2) वनिता, वेणु/तबला ग्रंथ मंजूषा/पृष्ठ-24
(3) पाण्डेय,डॉ० सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-114
(4) पार्श्वदेव विरचित/संगीत समय सार/पृष्ठ-138-139
(5) वनिता, वेणु/तबला ग्रंथ मंजूषा/पृष्ठ-25

1:4:5 सुधाकलश (संगीतोपनिष्त्सारोद्धार)-सुधा कलश द्वारा रचित संगीतोपनिष्त्सारोद्धार का रचना काल 1350 ई० तथा 14वीं शताब्दी के मध्य माना जाता है, जबकि आचार्य ब्रहस्पति द्वारा सुधकलश का काल 9वीं शताब्दी माना जाता है। भरत का संगीत सिद्धान्त पुस्तक के अनुसार सुधा कलश को राज शेखर के गुरु जैनाचार्य का शिष्य बताया है।(1) संगीतोपनिष्त्सारोद्धार मे छ: अध्याय प्राप्त होते है। प्रथम अध्याय नादोत्पत्ति, गीतप्रबंध का विवरण तथा द्वितीय अध्याय ताल प्रकाश जिसके अंतर्गत ताल प्रस्तार नष्ट, उद्दिष्ठ का विवरण प्राप्त होता है, इस ग्रंथ मे ताल की मात्र को आधार मान कर ताल के लक्षण, पाटवर्ण का विवरण दिया गया है। मध्य काल के इस ग्रंथ मे तालों को मात्राओ के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। इस ग्रंथ मे **74** तालों के लक्षण प्राप्त होते है।(2)

1:4:6 शुभांकर (संगीत दामोदर)– यह ग्रंथ नाट्य और संगीत पर रचित ग्रंथ है इसके रचनाकार शुभांकर है, 15वीं शताब्दी का माना जाता है। "स्वामी प्रज्ञानन्द के अनुसार 16 वीं शताब्दी भी माना जाता है।(3) इस ग्रंथ मे पाँच अध्याय है, शुभांकर द्वारा रचित इस ग्रंथ मे भरत मुनि कृत नाट्यशास्त्र मे वर्णित ताल को मानी मानते हुए तृतीय अध्याय मे **60** तालों ल नाम व विवरण दिया है तथा द्रुत, लघु, लघु, प्लुत आदि की चर्चा की है।(4)

1:4:7 संगीत पारिजात-पंडित अहोबल द्वारा रचित ग्रंथ संगीत पारिजात का काल 17वीं शताब्दी माना जाता है। इस ग्रंथ मे गीत वाद्य और नृत्य तीनों इसमे विद्यमान है, परंतु प्राप्त ग्रंथ मे दो अंग गीत काण्ड और वाद्य काण्ड ही उपलब्ध होते है। संगीत पारिजात का सन 1724 मे फारसी भाषा मे अनुवाद हुआ जिसके आधार पर ही सम्पूर्ण ग्रंथ के महत्व को समझते हुए तसरा काण्ड भी भाष्य किया गया। संगीत पारिजात के दो संस्करण भी उपलब्ध है। प्रथम संस्करण सन 1884 मे जीवनन्द विद्यासागर द्वारा कोलकत्ता मे सरस्वती यंत्र मे मुद्रित से प्रकाशित हुआ था, जिसमे गीत काण्ड के राग प्रकरण तक के विषय ही प्राप्त होते है तथा दूसरा संस्करण सन1897 मे पुणे के राव जी श्रीधर गोन्धलेकर द्वारा कराया गया जिसमे गीत काण्ड व वाद्य-ताल काण्ड का सम्पूर्ण विवरण प्राप्त होता है। संगीत पारिजात के प्रथम गीत काण्ड मे नादोत्पत्ति,नाद के भेद,श्रुति, ग्राम, मूर्छना,वर्ण अलंकार,गमक,वीणा पर स्वर स्थापना मेल राग , प्रबंध तथा गीतकार के लक्षण व गुण दोष का विवरण दिया गया है। दूसरा अध्याय वाद्य ताल काण्ड जिसको दो भागो मे विभाजित करते हुए

---

(1) आचार्य वृहस्पति/भरत का संगीत सिद्धान्त/पृष्ठ-25
(2) वनिता,वेणु/तबला ग्रंथ मंजूषा/पृष्ठ-26
(3) पाण्डेय, डॉ० सुधांशु/ताल रत्नाकर/पृष्ठ-166
(4) वनिता, वेणु/तबला ग्रंथ मंजूषा/पृष्ठ-27

प्रथम भाग मे तत् वाद्य, आनद्ध वाद्य, (मृदुङ्ग, दुंदुभि, भेरी, रुंजा, डमरू, पटह, चक्रवाद्य,एवं हुडुक्का वाद्यों का वर्णन किया गया है, तथा दूसरे भाग मे ताल के दश प्राणों का वर्णन किया गया है। इसके साथ साथ इस ग्रंथ मे तारों की लंबाई के अनुसार स्वरों के लक्षण को बताया गया है।

1:4:8 पुंडरिक विट्ठल (नृत्य निर्णय)- अकबर के काल मे रचित ग्रंथ नृत्य निर्णय पुंडरिक विट्ठल द्वारा रचित ग्रंथ है। 16वीं शताब्दी (1562-99) के मध्य इस ग्रंथ का रचना काल माना जाता है। " इस ग्रंथ मे ताल दश प्राण को छ: साधन के रूप मे बताया गया है। जिसमे क्रिया, मार्ग, ग्रह, परिवर्त, लय, यति मार्गी तालों की चर्चा है।(1)

1:4:9 श्री कंठ (रस कौमुदी)–रस कौमुदी 1575 ई० 16वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे रचित ग्रंथ है जिसकी रचना श्री कंठ द्वारा की गई। इसमे दो खंड व प्रत्येक खंड मे पाँच अध्याय प्राप्त होते है। प्रथम पाँच संगीत विषय के अध्याय है। इस ग्रंथ के चतुर्थ अध्याय वाद्यध्याय मे वाद्यों के चार भेद, ताल निष्पत्ति, ताल के दश प्राण, पाँच मार्ग, प्रस्तार का वर्णन तथा 37 ताल के रूप की चर्चा प्राप्त होती है।(2)

निष्कर्ष- संगीत मकरंद देवर्षि नारद द्वारा रचित ग्रंथ है, जो कि अनेक विचारों का अध्ययन करके धार्मिक दृष्टी को समझते हुये, देवर्षि नारद के विषय मे कई मतभेद है, कि संगीत मकरंद के रचनाकार देवर्षि नारद कोई दूसरे नारद रहे होंगे या नारद नाम का कोई सम्प्रदाय रहा होगा, जो नारद के नाम से विचारों का प्रतिपादन करता होगा, किन्तु शोधछात्रा का विचार है, कि संगीत मकरंद के रचनाकार देवर्षि नारद वही नारद है, जिनकों सभी देवर्षि नारद, मुनि नारद, गन्धर्व नारद, ऋषि नारद, सिद्ध पुरुष नारद, ब्रह्मचारी नारद के रूप मे जानते है। युगों के अनुसार देवर्षि नारद का स्वरूप परिवर्तित होता रहा है। शोधछात्रा का ऐसा मानना गलत नही होगा, कि संगीत मकरंद को देवर्षि नारद द्वारा ही रचित किया गया है। यह प्रक्रिया उस प्रक्रिया की भांति रही होगी, कि जिस प्रकार से महाभारत की रचना, व्याख्या, वर्णन, उच्चारण वेद व्यास द्वारा माना जाता है, परन्तु महाभारत को लिपिबद्ध भगवान् गणेश जी द्वारा वेद व्यास के अनुसार किया गया था। इसी प्रकार हो सकता है, कि देवर्षि नारद द्वारा संगीत मकरंद (संगीत के पुष्प रूपी ज्ञान का पराग) को एकत्र करके इस ग्रन्थ की रचना की गयी हो और इसको भी लिपिबद्ध किसी अन्य के द्वारा देवर्षि नारद के अनुसार किया गया हो। इसलिए संगीत मकरंद के रचनाकार पंडित नारद (देवर्षि नारद) के विषय मे विद्वानों के विभिन्न मत है। संगीत मकरंद के विषय मे तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि यह एक पाण्डुलिपि

(1) वनिता, वेणु/तबला ग्रंथ मंजूषा/पृष्ठ-28
(2) वनिता, वेणु/तबला ग्रंथ मंजूषा/पृष्ठ-28

है, जिसके होने का प्रमाण गुजरात स्थित बड़ौदा की ''सेंट्रल लाइब्रेरी'' मे था, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि संगीत मकरंद कि पांडुलिपी वर्तमान मे (**Oriental Institute of Baroda**) प्राच्य विद्या मंदिर बड़ौदा मे हो सकती है।

शक संवत 1599 अर्थात् 1677 ई० मे 'कृष्णाजी दत्त' नाम के व्यक्ति द्वारा प्राचीन प्रतिलिपि से नवीन प्रतिलिपि तैयार की गयी थी। इस पर विचार करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है, कि शक संवत 1599 अर्थात् 1677 ई० मे इसकी नवीन प्रतिलिपि तैयार करने के कारण ही कुछ विद्वान् संगीत मकरन्द को 16वीं, व 17वीं शताब्दी का ग्रन्थ मानने लगे । काल निर्णय निर्धारण की चर्चा करते हुये, संगीत मकरंद को 7वीं शताब्दी से 10वीं शताब्दी के मध्य मानना उचित होगा। विभिन्न तथ्यों को आत्मसात करते हुए संगीत मकरंद को 7वीं से 10वीं शताब्दी काल के प्रमुख ग्रन्थों मे से महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। संगीत मकरंद मे वाद्य व ताल कि चर्चा संगीतध्याय व नृत्यध्याय के अंतर्गत की गयी है इसके विषय मे शोधार्थी के मार्गदर्शक **प्रो० गौरांग भावसार** द्वारा विषय पर प्रकाश डालते हुये विभिन्न तथ्यो से अवगत कराया जो इस प्रकार है, प्राचीन भव्य मंदिरों मे नृत्य की मूर्तियां वाद्य प्रधान मूर्तियों से अधिक द्रष्टव्य हैं, नृत्यमुद्रा के साथ वाद्य सहायक के रूप मे देखने को मिलते है। धार्मिक व सामाजिक कार्यो के उत्सवों के साथ नृत्य जुड़ा हुआ था नृत्य ताल प्रधान होने के कारण नृत्य मे वाद्यो का होना स्वभाविक है, इसलिए यह कहा जा सकता है, कि ऐसी व्यवस्था के अनुरूप संगीत मकरंद मे नृत्याध्याय मे वाद्यों व तालों की चर्चा की गई है। संगीत मकरंद मे गान की चर्चा की गई है। जिसे संगीतध्याय के रूप मे देखा जा सकता है, गान और नृत्य दोनो ही ताल आधारित है। ताल व वाद्य की मौलिकता को दर्शाने के लिए संगीत मकरंद को दो ही अध्यायों मे विभाजित किया गया है। गान मे नृत्य नही है और नृत्य मे गान नही है परंतु दोनों ही ताल व वाद्य पर आधारित है। दोनो ही ताल के बिना संभव नही है क्योंकि वाद्यों के द्वारा ही ताल व लय निर्धारित की जा सकती है। ताल मे ही गति निर्धारित की जाती है, इसलिए ताल की चर्चा संगीत मकरंद मे संगीताध्याय व नृत्याध्याय दोनो अध्यायों मे की गई है। नृत्याध्याय मे वाद्य, ताल व ताल के दश प्राणों का वर्णन किया गया है।

संपूर्ण अध्याय में शोधार्थी पंडित नारद का परिचय देते हुए स्पष्ट करना चाहती है, कि पंडित नारद प्रत्येक कार्य में विभिन्न रूपों में विद्यमान थे। जिनके अनगिनत स्वरूपों का वर्णन तथ्यों के साथ प्राप्त होता है। शोधार्थी को ऐसा प्रतीत होता है, कि पंडित नारद का होना अति आवश्यक था। क्योंकि नारद प्रत्येक कार्य के कारक थे। वेद काल से वर्तमान काल तक जो भी कार्य हुये है, उनके आद्य प्रतिमान नारद है, प्रत्येक व्यक्ति नारद को कलहकारी व कलह का जनक मानते है, परंतु नारद कलहकारी नहीं बल्कि कलह हितकारी थे, जो हित के लिए प्रत्येक कार्य में कारक की भूमिका निभाते थे। पंडित नारद के विषय में अध्ययन करने

के पश्चात यह ज्ञात हुआ कि संगीत को पृथ्वी लोक तक लाने का कार्य नारद को दिया गया क्योंकि नारद त्रिलोकगामी थे, जिनके द्वारा देवों के मुख से उत्पन्न व निर्मित संगीत को पृथ्वी लोक तक पहुंचाया गया और प्रत्येक मानव जाति को भगवान की भक्ति का मार्ग दिखाया। मार्गदर्शक के रुप में आज भी नारद विद्यमान है। नारद के विषय में चर्चा करके यह अनुभूति होती है, कि वर्तमान में नारद तो नहीं हो सकते परंतु आज भी हर एक कार्य के पीछे नारद की ही भूमिका है, जो प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान है, और वही हमें कार्य करने और आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान कर रहे है। पंडित नारद के काल के विषय मे मतभेद है क्योकि नारद आज भी सूक्ष्म रूप मे विद्यमान है, और प्रत्येक कार्य के कारक है।

****